प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-
मासिक
माघ-फाल्गुन, विक्रम संवत् 2082 (फरवरी -2026)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

धन्य! हो गई टंकारा की पावन भूमि

सकल हिन्दू सम्मेलन

भारत की पहली
रैपिड रेल सेवा
मेरठ से दिल्ली तक 'नमो भारत' का संचालन

काम दमदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 02

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

ब्रह्मवाणी की अमरता-6

राष्ट्र आराधना की प्रेरणा देते संघ गीत-10

भारत की संसदीय विरासत और ग्लोबल साउथ की मजबूत आवाज -16

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व का बढ़ता प्रभाव संस्कृति से लेकर वैश्विक अर्थव्यवस्था तक -30

धन्य! हो गई टंकारा की पावन भूमि.....05

सकल हिन्दू सम्मेलन.....08

'लखनपुर' से सात समुंदर पार तक 'उत्तर प्रदेश दिवस' की धमक.....12

छत्रपति शिवाजी महाराज.....14

बदलती विश्व व्यवस्था और भारत.....18

पेयजल गुणवत्ता को लेकर बढ़ती चिंताएं.....20

तेल, कानून और लोकतंत्र पर्यावरण की कीमत पर विकास.....22

इंसानियत की रक्षा के लिए जेन Z चले स्वामी विवेकानंद के बताए रास्ते.....24

देश की समृद्ध जीवंत संस्कृतिक उत्सवों का फरवरी.....26

स्वास्थ्य : सर्दियों के मौसम में होने वाली बीमारियां एवं उनसे बचाव.....28

कविता.....29

भारत झोला वुमन : एक शांत विचार से जन्मी जनआदत.....31

आत्मनिर्भरता स्टोरी.....32

हिन्दुत्व : अंतर्निहित है युगानुकूल सुधार प्रक्रिया

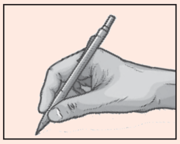

स्वामी दयानंद एक महान विचारक, समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक थे। उस समय भारतवर्ष में अंग्रेजों का शासन था और हिन्दू धर्म में अनेकों कुरीतियाँ व्याप्त थीं जैसे, जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह, सती प्रथा, पशु बलि, नर बलि, पर्दा प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि। स्वामी दयानंद ने इन कुरीतियों से हिन्दू धर्म को मुक्त करने के लिए गुण-कर्म- स्वभाव आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया तथा विधवा विवाह, सर्व शिक्षा, नारी सशक्तिकरण, नारी शिक्षा, सबको वेद पढ़ने का अधिकार, आदि के लिए प्रयास किया।

संत रविदास (1-फरवरी) तथा स्वामी दयानंद सरस्वती (12-फरवरी) जैसे हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के 'अद्वितीय' पुरोधाओं की जन्म जयंती फरवरी माह में ही है। संत रविदास पंद्रहवीं शताब्दी में वर्तमान उत्तर-प्रदेश के वाराणसी में तथा स्वामी दयानंद सरस्वती उन्नीसवीं शताब्दी में गुजरात के टंकारा में जन्मे। संत रविदास ने अपने समय में हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों जैसे, जातिवाद तथा अंधविश्वास का उन्मूलन कर समरसता युक्त भारतीय समाज की स्थापना का प्रयास किया। वो कहते थे -

जात-पात के फेर मह, उरझि रहे सब लोग।
मानुषता को खात है, रैदास जात का रोग।।

अर्थात् भारत में जाति एक ऐसे रोग के रूप में उभरी है जिसके चक्कर में भारत के लोग उलझे हुए हैं। जाति का यह रोग हम भारतीयों की मनुष्यता का क्षरण कर रहा है। जब तक जाति गौण नहीं होगी तब तक भारतीयों की मूल मानवता पुनर्स्थापित नहीं हो सकेगी। उनका जन्म एक चर्मकार परिवार में हुआ, जहां उनके पिता रघु श्री जूते बनाने का कार्य करते थे। मीरा बाई ने अपने अनेक पदों में रविदास का गुरु रूप में स्मरण किया है। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' को चरितार्थ कर उन्होंने यह संदेश दिया कि बाहरी शुद्धता की जगह मन की पवित्रता ज्यादा महत्वपूर्ण है।

वर्ष 1824 में जन्मे स्वामी दयानंद एक महान विचारक, समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक थे। उस समय भारतवर्ष में अंग्रेजों का शासन था और हिन्दू धर्म में अनेकों कुरीतियाँ व्याप्त थीं जैसे, जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह, सती प्रथा, पशु बलि, नर बलि, पर्दा प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि। स्वामी दयानंद ने इन कुरीतियों से हिन्दू धर्म को मुक्त करने के लिए गुण-कर्म- स्वभाव आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया तथा विधवा विवाह, सर्व शिक्षा, नारी सशक्तिकरण, नारी शिक्षा, सबको वेद पढ़ने का अधिकार, आदि के लिए प्रयास किया। प्रथम हिन्दू अनाथालय की स्थापना, प्रथम गौशाला की स्थापना, स्वदेशी आन्दोलन, हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन भी इन्होंने किया। उन्होंने हिंदुओं से 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान किया, मूर्तिपूजा व पाखंड का विरोध किया, स्वराज्य का आह्वान किया, विधवा पुनर्विवाह एवं स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन किया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक सुधारों की नींव रखी। उनके विचारों ने तिलक, लाला लाजपत राय और गांधी जैसे नेताओं को प्रभावित किया। इसी प्रवाह को आगे बढ़ाने का कार्य संघ पिछले 100 वर्ष से कर रहा है। परंतु आज चुनौतियां संत रविदास तथा स्वामी दयानंद के युग से जटिल एवं चुनौतीपूर्ण हैं। संघ भारत को परम वैभव पर स्थापित करने के लिए ऐसे चरित्रवान व्यक्ति निर्मित करने में जुटा है जिनसे समाज में समरसता, राष्ट्रीयता, आत्मनिर्भरता, एवं महिला सशक्तिकरण का भाव स्थापित हो। सौ वर्ष की यात्रा पूर्ण होने के अवसर पर संघ हिन्दू समाज को एकजुट करने तथा कुरीतियों के उन्मूलन के उद्देश्य से पूरे देश में हिन्दू सम्मेलन आयोजित कर रहा है। ऐसे प्रयासों से परम वैभय युक्त भारत के निर्माण का रास्ता प्रशस्त होगा। ■

धन्य! हो गई टंकारा की पावन भूमि

आर्य सागर
अध्यक्ष, आर्य समाज की भाषा प्रचारिणी सभा

आर्य समाज के संस्थापक, समग्र क्रांति के अग्रदूत आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म संवत 1871 विक्रमी तदनुसार 12 फरवरी सन 1824 ईस्वी में गुजरात राज्य के मोरबी जनपद के टंकारा गांव में हुआ था। महर्षि जी का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था तो उनका नाम मूलशंकर रखा गया, संन्यास दीक्षा के पश्चात मूलशंकर का ही नाम दयानन्द हुआ। महर्षि दयानंद का जन्म एक संपन्न औदिच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिताजी का नाम कृष्ण जी तिवारी था जिन्हें उस समय मोरबी राज्य की रियासत की ओर से एक छोटी सी जमींदारी प्राप्त थी। महर्षि दयानंद अपनी स्वयं कथित छोटे से जीवन चरित्र में इतना ही बताते हैं कि गुजरातियों में अन्य प्रांत की अपेक्षा संतान प्रेम बहुत अधिक होता है। ऐसे ही लाड दुलार से महर्षि दयानन्द का लालन पालन हुआ था। आठवें वर्ष में बालक मूलशंकर का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया गायत्री, सन्ध्या, रुद्री आदि कंठस्थ कराए गए। बालक मूलशंकर की स्मरण शक्ति जन्म से ही बहुत तीव्र थी। उस समय के अनुसार एक ब्राह्मण बालक को जैसी प्रारंभिक शिक्षा मिलनी चाहिए वह बालक मूलशंकर को मिलती रही। 14 वर्ष की आयु तक वह यजुर्वेद संहिता कंठस्थ कर चुके थे। व्याकरण में भी उनका कुछ-कुछ प्रवेश हो गया था। प्रत्येक महापुरुष के जीवन में एक अविस्मरणीय घटना जरूर घटती है जो उनके भावी जीवन की दशा व दिशा को ही बदल देती है। ठीक ऐसा ही महर्षि दयानन्द के साथ हुआ। 1885 विक्रम की माघ वदी शिवरात्रि को महर्षि दयानन्द ने कुल की शैव परंपरा के अनुसार शिवरात्रि का व्रत रखा। घर के पास ही शिवालय में जब शिवरात्रि के जागरण पर जो लोग रात भर जागकर पुण्य लूटने का संकल्प लिए बैठे थे वह निद्रा देवी की सुखमय गोद का आनंद लेने लगे। रात्रि को जब सब सो गए तो बालक मूलशंकर जाग रहा था जिसकी दृष्टि बराबर शिवलिंग पर गड़ी हुई थी। वह उस अद्भुत शक्ति संपन्न देवता की ओर चाव भरी नजर से देख रहा था। अचानक वह बालक क्या देखता है मध्यरात्रि में मंदिर में सन्नाटा पसरा है चूहे बिलों से निकल आए हैं मूर्ति के इर्द-गिर्द चावल आदि के जो दाने पड़े उन्हें खा रहे हैं। बीच-बीच में चूहे मूर्ति के ऊपर भी चढ़ रहे थे। मूलशंकर ने सोचा जो महादेव बड़े-बड़े दानवों के व्यतिक्रम को नहीं सह सकता और त्रिशूल

लेकर उनका संहार करता है वह चूहों को सिर पर चढ़ने से तो अवश्य रोकेगा और कुछ नहीं तो फिर सिर हिलाकर उन्हें भगा देगा। परंतु उसने आश्चर्य और विस्मय देखा कि वह निश्चल ही रहा, हिला-डुला नहीं। तब क्या यह पत्थर ही वह शिव है, जो कैलाश पर निवास करता है, जिसमें संसार का संहार करने की शक्ति है, जिसकी त्रिशूल की ज्योति से दानवों के कलेजे कांप जाते हैं? वह कोई और ही शिव होगा, इसमें और उसमें अवश्य भेद होगा । वहीं से बालक मूल शंकर के मन में सच्चे शिव को जानने की तीव्र जिज्ञासा जागृत हो गई, मूर्ति पूजा से उन्हें विराग हो जाता है। शिवरात्रि की घटना महान परिवर्तन का कारण बन गई। उल्लेखनीय होगा आज आर्य समाज का संगठन शिवरात्रि को ऋषिबोद्ध उत्सव के रुप में मनाता है। मंदिर की घटना के दो-चार वर्ष पश्चात हैजा आदि रोग से चाचा और बहन की मृत्यु के पश्चात तो युवा मूलशंकर में तीव्र वैराग्य भी जागृत हो गया। नतीजा विक्रमी संवत 1903 को ज्येष्ठ मास में उन्होंने घर छोड़ दिया, 21 वर्ष की आयु में सन 1845 में प्रेममय घर और सरल राजमार्ग विलास वैभव को लात मार कर बिहड वन का रास्ता उन्होंने चुना। गृह त्याग के 15 वर्ष के पश्चात नर्मदा से लेकर देव भूमि उत्तराखंड में गंगा के किनारे सघन वनों में विचरे। 15 वर्ष तक जिज्ञासु दयानन्द ने पहाड़ और मैदानों को नाप डाला, घोर कष्ट सहा और तपश्चर्या की। सच्चे शिव को प्राप्त करने तथा मृत्यु को जीतने के लिए हिमालय के अनेक योगियों से मिलकर योग की गहन साधनाएं उन्होंने सीखी। हरिद्वार के उस समय 130 वर्ष से अधिक आयु के स्वामी पूर्णानंद से उन्होंने संन्यास लिया, संन्यास लेकर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी से दयानन्द उनका नाम प्रसिद्ध हुआ। 1860 में मथुरा के दंडी प्रज्ञा चक्षु संन्यासी विरजानन्द को पाकर वह धन्य हो गए यह कह सकते हैं प्रज्ञा चक्षु शिष्य रुप में आदित्य ब्रह्मचारी अमित तेजस्वी महर्षि दयानन्द सरस्वती को पाकर खुद धन्य हो गए। गुरु के कुल में उन्होंने 3 वर्ष रहकर उनकी सेवा करते हुए व्याकरण के अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि ग्रंथों को पढ़ा, आर्ष व अनार्ष की कसौटी व वेद विरुद्ध मतों की समालोचना की दृष्टि भी उन्हें वहीं से प्राप्त हुई। 1863 से लेकर महर्षि दयानन्द के देहावसान 1883 तक का जीवन खुली किताब है। उन्होंने धर्म क्षेत्र ही नहीं समाज राष्ट्र की नव चेतना को जगाने में जो कार्य किया पुनर्जागरण की जो नींव डाली उस नींव पर आज का आधुनिक भारत खड़ा हुआ है। 2024 में महर्षि दयानन्द की द्विजन्म शताब्दी समारोह पूरे देश में धूमधाम से मनाये गये। ग्राम से लेकर प्रांत, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। वहीं इस वर्ष महर्षि दयानंद की जन्म भूमि टंकारा में स्थापित आर्य समाज टंकारा की स्थापना का शताब्दी समारोह भी फरवरी २०२६ में धूमधाम से मनाया जा रहा है। महर्षि दयानंद स्मारक न्यास के तत्वाधान में यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। ■

ब्रह्मवाणी की अमरता

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

त्रेतायुग के अन्तिम चरण में श्रीमन नारायण विष्णु ने श्रीराम के नाम से भाईयों समेत परम शक्ति सीता के साथ अवतार लिया था। श्रीराम के अवतार की घटना कब हुई । कितना कालखण्ड बीत चुका है। इस सम्बन्ध में विभिन्न गणनाओं के आधार पर 17000 से 12000 वर्ष पूर्व के कालखण्ड के मध्य श्रीराम के धरा पर अवतरित होने की पुष्टि की गयी है।

श्रीराम के अवतार के पहले यह धरा आततायियों के पापों से कम्पित हो रही थी। त्रेतायुग में श्रीरामावतरण से पूर्व सर्वत्र राक्षस वृत्ति प्रचण्ड थी। धरती आकाश सभी के देवता लंका के राक्षस राजा रावण और उनके साथियों के उत्पात से आकुल थे। तभी महादेव की अध्यक्षता और ब्रह्मा जी की उपस्थिति में समस्त देवता और देवियां संकट से उबरने के लिए एक धर्म सभा में एकत्र हुए थे। धरा के अनेक प्रतिनिधियों ने अपनी पीड़ा सुनायी थी। तब ब्रह्मा जी ने सभी की वेदना सुनने के बाद कहा था- यह संकट महादेव के वरदान का परिणाम है। इसलिए वही बताएंगे कि क्या करना होगा।

रावण और उसकी आसुरी शक्ति इतनी प्रचण्ड है कि मेरे या समस्त देवों-देवियों के संयुक्त बल से भी नियन्त्रित नहीं हो सकती। धरती माता गो- माता, समस्त देवियां और देवता महादेव की ओर निहारने लगे। महादेव ने स्वीकार किया कि उन्होंने रावण को वरदान दिया था। एक संकल्प से हम और ब्रह्मा जी सहित समस्त दैवी शक्तियां बंधी हैं -कोई कठिन तपश्चर्या करता है तो अपेक्षित वरदान देना होगा।

महादेव की ओर सभा की समस्त दैवी शक्तियां विकल होकर दुखी मन से आस लगाये देखने लगीं। महादेव ने देखा कि वहां उपस्थित सभी सभासद अपलक उनकी ओर देख रहे हैं। महादेव ने कहा मैं अपना अभिमत बताता हूं। यह कि मैंने उसे अभयदान दिया है इसलिए स्वयं (रावण को) मारने के लिए अस्त्र शस्त्र नहीं उठाऊंगा। पर वह कैसे मरेगा, यह बताता हूं।

श्रीमन नारायण हम सभी के मध्य सर्वशक्तिमान वरेण्य परम शक्ति हैं। उनकी स्तुति की जाय। उनसे विनती करने पर समाधान मिल जाएगा। संस्कृत भाषा में वह स्तुति आदि कवि वाल्मीकि ने रामकथा के प्रथम ग्रन्थ रामायण में और गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम चरित मानस में हिन्दी में प्रस्तुत की है। श्रीरामावतार की गाथा लिखने वाले अन्य कवियों भक्तों ने भी इस प्रसंग को अपनी भाषाओं में प्रस्तुत किया है। मानस ग्रन्थ में लिखी स्तुति इन पंक्तियों से

प्रारम्भ होती है जो बालकाण्ड में मिलती है-

जय जय सुरनायक जन सुख दायक। प्रणत पाल भगवन्ता।

गो -द्विज हितकारी जय असुरारी

सिन्धु सुता प्रिय कन्ता ।-

यह स्तुति श्रीराम भक्तों के बीच बहुश्रुत है। बहुधा भक्त जन इसे नित्य गाते हैं। श्रीमन नारायण प्रसन्न हुए तो ब्रह्मवाणी सुनायी पड़ी। इसको शास्त्रज्ञ ब्रह्मवाणी अवतार कहकर पावन मानते हैं।

श्रीनारायण ने सभा में उपस्थित समस्त जनों को बताया कि देवी देवताओं के पिता कश्यप ऋषि और उनकी संगिनी धर्मज्ञ अर्धांगिनी दिति को दिये गये वचन के अनुरूप मेरा अवतार होगा। तभी रावण समेत सभी आसुरी शक्तियां विनष्ट होंगी। रामावतार नर रूप में होगा। मेरे साथ परम् शक्ति भी अवतरित होंगी। वह जनक जी और सुनयना के घर पलेंगी। जबकि मेरा अवतरण तीन भ्राताओं के संग दशरथ के घर कौशल्या के पुत्र के रूप में होगा। राजा मनु वस्तुतः दशरथ होंगे और मनु की संगिनी शतरुपा ही कौशल्या के रूप में अयोध्या की महारानी होंगी। उनके साथ कैकेयी और सुमित्रा के पुत्रों के रूप में भरत और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न जन्म लेंगे।

श्रीमन नारायण की ब्रह्मवाणी के उपरान्त महादेव ने घोषणा की कि भगवान श्रीराम के परम भक्त के रूप में हनुमान बनकर वह वानर रूप धारण करेंगे। सूर्य ने कहा मैं सुग्रीव बनूंगा। इन्द्र देव को बालि बनने का दायित्व ब्रह्माजी ने सौंपा। स्वयं ब्रह्माजी ने कहा कि वह जामवन्त बनकर श्रीराम की सेना के साथ श्रीरामावतार के समय से लेकर द्वापर के श्रीकृष्ण के समय तक सशरीर बने रहेंगे। सभी देवी देवताओं , ऋषि मुनियों के लिए भी ब्रह्मा जी ने उस अवतरण काल के निमित्त भूमिकाएं बता दीं।

ब्रह्मवाणी सुनकर सनातन धर्म के उस सर्व प्रथम हुए हिन्दू सम्मेलन में हर्ष ध्वनि होने लगी। धर्म सभा में उपस्थित सौर मण्डल के समस्त देव गण देवियां और हमारी धरती माता के ऋषि मुनि, द्विज गण, समस्त सज्जन वृन्द, गो-माता अपनी विकलता विस्मृत कर आनन्द विभोर हो गये।

श्रीराम के अवतार के पहले यह धरा आततायियों के पापों से कम्पित हो रही थी। त्रेतायुग में श्रीरामावतरण से पूर्व सर्वत्र राक्षस वृत्ति प्रचण्ड थी। धरती आकाश सभी के देवता लंका के राक्षस राजा रावण और उनके साथियों के उत्पात से आकुल थे। तभी महादेव की अध्यक्षता और ब्रह्मा जी की उपस्थिति में समस्त देवता और देवियां संकट से उबरने के लिए एक धर्म सभा में एकत्र हुए थे। धरा के अनेक प्रतिनिधियों ने अपनी पीड़ा सुनायी थी। तब ब्रह्मा जी ने सभी की वेदना सुनने के बाद कहा था- यह संकट महादेव के वरदान का परिणाम है। इसलिए वही बताएंगे कि क्या करना होगा।

तभी सबको एक पल के लिए अपनी ओर केन्द्राभिमुख होकर स्थिर चित्त से एक और ब्रह्म ज्ञान की ओर कान लगाने को ब्रह्मा जी कहा- इस बार श्रीनारायण की धर्मांगिनी माता लक्ष्मी जी ने सम्बोधित किया - ध्यान रहे द्वापर युग में फिर एक बार ब्रह्म शक्ति का अवतरण श्रीराधाकृष्ण के रूप में होगा। तदन्तर जब कभी धरा पर अन्याय अधर्म बढ़ेगा। सनातन संस्कृति पर संकट आएगा। तब संगठित होकर सनातन धर्म के अनुरागियों को धर्म सम्मेलनों के माध्यम से अवतारी संगठित शक्ति को जागृत करना होगा।

कलयुग की वह संगठित शक्ति है भारत में 100 वर्ष पूर्व अवतरित हुआ संसार का सबसे बड़ा, अनुशासन बद्ध, संयमी-कर्तव्यनिष्ठ ऋषि तुल्य संयम से परिपूर्ण सज्जन शक्ति का पर्याय - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। जिस प्रकार श्रीराम को आसुरी शक्तियां मात्र वनवासी मानती थीं, श्रीकृष्ण को ग्वाला कहती थीं उसी तरह संघ के स्वयंसेवकों को खेल के मैदानों में खेलने वाले बालक और टहलने वाले वयोवृद्ध जन कहकर उपहास करते रहते हैं।

संघ की समेकित जनशक्ति ही दैवी शक्ति का अवतार है। संघ जन मन की अभिव्यक्ति का संवाहक है। धर्म का संरक्षक है। यह जन शक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को पहचानती है। आसुरी शक्तियों को समाप्त करने की विजेत्री शक्ति से युक्त है। यह शक्ति सनातन संस्कृति की अजेयता और अमरता को धारण करती आ रही है। सौ वर्ष एक पड़ाव भर है। जय जय भारत माता।

यह महाघोष इस अवतारी शक्ति की अमरता का मंत्र है। ■

सकल हिन्दू सम्मेलन

हिन्दुओं को बांटने के कुचक्र के बीच हिन्दुओं को जाग्रत और संगठित करने का अभियान

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

भारत राष्ट्र के रूपान्तरण के लिये चल रहे षड्यंत्र से सनातन समाज को जागरुक करने के अपने संकल्प के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से देशभर में सकल हिन्दू सम्मेलन का अभियान आरंभ हुआ जो जनवरी माह के अंत तक चलेगा। इन सम्मेलनों के बाद समाज में संगठनात्मक समरसता और दायित्व बोध की झलक भी देखने को मिलने लगी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक यात्रा के सौ वर्ष पूरे कर लिये हैं। संघ की स्थापना 1925 में हुई थी। वह 27 सितंबर विजयदशमीं का दिन था। संघ की पहली शाखा में केवल छः स्वयंसेवक थे। अब यह विश्व का सबसे विशाल सामाजिक संगठन है। जिसकी केवल भारत में ही 83129 दैनिक शाखाएं संचालित हो रहीं हैं। तकनीकि रूप से भले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को संगठन कहा जाय लेकिन यह करोड़ों कार्यकर्ताओं का मानों एक परिवार है। संघ की स्थापना से लेकर आजतक इस शताब्दी यात्रा में संघ पर सतत रूप से हमले हुये। सरकारों ने प्रतिबंध लगाये, संघ कार्यकर्ताओं और प्रचारकों पर हमले हुये, हत्याएं हुई। शाब्दिक हमले तो कभी बंद ही नहीं हुये। यदि अंग्रेजीकाल की बात छोड़ दी जाय तो स्वतंत्रता के बाद भी तीन बार प्रतिबंध लगे। गांधी जी की हत्या में झूठा फंसाया गया। लेकिन संघ की ध्येयनिष्ट यात्रा में कोई अंतर नहीं आया। वह हर संकट के बाद मानों और संकल्पनिष्ट होकर सामने आया। इतने हमलों के बाद भी संघ ने कभी किसी की आलोचना नहीं की, किसी को बुरा नहीं कहा। भारत राष्ट्र के परम वैभव के प्रति संघ की ध्येयनिष्टा अखंड रही। राष्ट्र, समाज और संस्कृति के प्रति यही संकल्पशीलता संघ के शताब्दी वर्ष आयोजन में दिखी। संघ ने अपने शताब्दी समागम को किसी उत्सव के रूप में नहीं मनाया अपितु अपनी ध्येय को गति देने का निमित्त बनाया। शताब्दी यात्रा पूर्ण करने के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने तीन अभियान चलाये। पहला गणवेश धारी स्वयंसेवकों का पथ संचलन दूसरा हर घर संपर्क अभियान और तीसरा 'जात पात की करो विदाई, हम सब हिन्दू भाई भाई' उद्घोष के साथ सकल हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन। स्वयंसेवकों द्वारा गणवेश में बस्ती स्तर पर 2 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2025 के बीच, विशाल पथ संचलनों का आयोजन किया गया था। देशभर की प्रत्येक बस्ती में आयोजित ऐसे पथ संचलन में सरसंघचालक से लेकर संघ का प्रत्येक सामान्य कार्यकर्ता भी गणवेश में सम्मिलित हुआ। दूसरे कार्यक्रम के रूप में संघ के स्वयंसेवकों ने अपनी बस्ती एवं मोहल्लों में 15 नवम्बर से 30 नवम्बर 2025 के बीच प्रत्येक घर पर दस्तक दी। इस गृह सम्पर्क अभियान में 'संगठित हिन्दू समर्थ भारत' का संदेश दिया गया। इसी श्रृंखला की तीसरी कड़ी में पूरे देश में हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन आरंभ हुआ। भारत के एक छोटे ग्राम से लेकर महानगरों तक की प्रत्येक बस्ती में ऐसे एक लाख से अधिक हिंदू सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनी। इनकी शुरुआत 20 दिसम्बर 2025 से हुई थी और इन्हें 20 जनवरी 2026 तक पूरा किया जाना है। लेकिन कहीं कहीं यह तिथि आगे भी बढ़ाई गई है और संभावना है कि 25 जनवरी तक लक्ष्य पूरा हो जायेगा। हिंदू सम्मेलन आयोजित करने की भावना तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की है, पर इनका आयोजक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयं नहीं है। इनका आयोजन स्थानीय स्तर पर सकल हिंदू समाज द्वारा किया जा रहा है। अब तक जैसे समाचार पूरे देश से आ रहे हैं उनके अनुसार प्रत्येक आयोजन में हिंदू समाज की उत्साह पूर्वक सहभागिता देखने को मिल रही है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों और सेवा बस्तियों में अपेक्षाकृत अधिक उत्साह देखा गया। जितना उत्साह सम्मेलन में सम्मिलित होने का था। उससे अधिक उत्साह सम्मेलन के बाद सामाजिक समरसता के वातावरण में देखा गया। सम्मेलन में आये वक्ताओं का संदेश बहुत स्पष्ट और सामयिक था। प्रत्येक हिन्दु

सम्मेलन में स्थानीय वक्ताओं के अतिरिक्त तीन प्रकार के मुख्य वक्ता रहे। इनमें एक संत समाज से, दूसरे सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों से संबंधित मातृशक्ति और तीसरे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित वक्ता। संतों की ओर से शास्त्रों और पुराणकथाओं के आधार पर संपूर्ण समाज को अपनी परंपराओं से जुड़ने और एक जुट रहने का आह्वान किया गया। यह स्पष्ट किया गया कि सभी सनातनी ऋषियों की संतान हैं, जाति भेद सल्तनतकाल और अंग्रेजीकाल में फैलाये गये। अब हमें उस कुचक्र से सावधान रहना है। संतों ने यह आह्वान भी किया कि सप्ताह में कम से कम एक दिन परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठें, घर का बना भोजन साथ खाएं और अपने ईष्ट की पूजा प्रार्थना करें, इससे न केवल पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते मजबूत होंगे अपितु यह परिवार की प्रगति और अपनी परंपराओं को समझने का आधार बनेगा। जबकि सामाजिक अथवा सांस्कृतिक संगठनों से संबंधित मातृ शक्ति के वक्ता ने कुटुम्ब समन्वय, स्वत्व वोध और स्वदेशी का महत्व, जीवन के लिये पर्यावरण की महत्ता, नागरिक कर्तव्यों का पालन एवं संगठित सामाज की महत्ता समझाई। स्वाभाविक है कि समाज में अधिकार के साथ कर्त्तव्य पालन का भाव आया, पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ी, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग और स्वसंस्कृति के अनुरुप जीवन शैली बढ़ी तो समाज और राष्ट्र की अनेक समस्याओं का समाधान स्वमेव हो जायेगा। वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित वक्ता ने संघ की ध्येयनिष्ट शताब्दी यात्रा की जानकारी दी और देश एवं समाज के सामने बढ़ती चुनौतियों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया। इन वक्ताओं ने इतिहास और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घटने वाली घटनाओं का उदाहरण देकर समझाया कि वही समाज इतिहास में अमिट रहता है जो सजग और संगठित रहता है। लगभग सभी वक्ताओं ने समस्त हिंदू समाज में आपसी समझ बढ़ाने, एक दूसरे का सहयोगी बनकर देश का इतिहास एवं पूर्वजों की परंपरा को जानने पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहल पर ये हिन्दू सम्मेलन ऐसे समय आयोजित किये जा रहे हैं जब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ शक्तियां सनातन हिन्दू समाज को विभाजित करने का कुचक्र कर रहीं हैं। ये शक्तियां भारत राष्ट्र के सांस्कृतिक स्वरूप का रूपान्तरण करने के कुचक्र मे एकजुट होकर कार्य कर रहीं हैं। उनका प्रयास सनातन हिन्दू समाज को भ्रमित करना, उसे अपनी जड़ों से काटना और जातीय विभेद पैदा करना है ताकि भारत राष्ट्र की प्रगति को अवरुद्ध किया जा सके और सनातन हिन्दू समाज का धार्मिक और सांस्कृतिक रूपान्तरण कराया जा सके। इसके लिये प्रतिदिन नये नये षड्यंत्र किये जा रहे हैं। जन्म और जाति आधारित विभेद उत्पन्न करके आंतरिक अशान्ति पैदा करने का कुचक्र किया जा रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि भारत में सामाजिक व्यवस्था जन्म अथवा जाति आधारित नहीं थी। भारत की सामाजिक व्यवस्था गुण और कर्म आधारित 'वर्ण व्यवस्था' रही है। इसे समझने के लिये हर कालखंड में पर्याप्त उदाहरण हैं। यदि पुराण काल में देखे तो कुबेर और रावण एक ही पिता की संतान हैं। लेकिन समाज में दोनों का स्थान अलग-अलग है। कुबेर की गणना देवताओं में होती है, दीपावली पर पूजन किया जाता है जबकि रावण की गणना राक्षसों में होती है, दशहरे के दिन पुतला जलाया जाता है। वहीं मातंग ऋषि ने अपने आश्रम की उत्तराधिकारी माता शबरी को बनाया था। माता शबरी का संबंध शबर वनवासी समाज से है। महर्षि व्यास की माता मछली पालक समाज से थीं और महर्षि बाल्मीकि का जन्म व्याध समाज में हुआ था। पुराण काल से बाद के इतिहास को देखे तो मगध के दोनों नंदवंश और मौर्य वंश सेवा वर्ग से संबंधित थे। जिन्हें आज की शब्दावली में अनुसूचित जाति कहते हैं। यदि भारत में जन्म या जाति आधारित समाज व्यवस्था होती तो ये दोनों शासक कैसे बनते? मध्यकाल में देखे तो रानी दुर्गावती कालिंजर के चंदेल राजपूत राजा की पुत्री थीं। उनका विवाह गौंडवांना में हुआ था। संत रविदास जी का जन्म चर्म शिल्पकार समाज में हुआ था। वे रामानंदाचार्य के शिष्य थे और मीराबाई एवं झाला रानी ने संत रविदासजी को अपना गुरु बनाया था। यदि भारतीय समाज जीवन में जाति का निर्धारण जन्म आधारित होता तो न मीरा बाई संत रविदासजी को अपना गुरु बनातीं और न रानी दुर्गावती का विवाह गौंडवांना में होता। भारतीय इतिहास में केवल यही उदाहरण नहीं हैं। ऐसे असंख्य विवरण हैं। लेकिन योजना पूर्वक सनातन हिन्दू समाज को बांटने का प्रयास हो रहा है। विभाजन की यह लकीर गहरी करने के रोज नये बहाने ढूंढे जा रहे हैं। कभी जन गणना के नाम पर तो कभी किसी के बहाने। और तो और व्यक्तिगत अपराध की घटनाओं में पीड़ित और आरोपी दोनों को जाति से जोड़कर प्रचारित किया जाता है। जबकि किसी अन्य समाज या वर्ग में जाति आधारित विभाजन की बात कतई नहीं होती। केवल हिन्दू समाज में जातीय विभाजन की चर्चा जोर शोर से की जाती है। सनातन हिन्दू समाज को जागरुक होकर इस षड्यंत्र को समझना होगा। सकल हिन्दू समाज द्वारा आयोजित इन सम्मेलनों में जागरुकता का यही संदेश दिया गया। यह बात बहुत स्पष्ट रूप से समझाई गई कि समाज और देश दोनों की प्रगति के लिये सबको एकजुट होना आवश्यक है।

समाज को एकजुटता के इस संदेश के साथ इन सम्मेलनों से भारतीय समाज जीवन में यह संदेश बहुत स्पष्ट रूप से गया कि किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके जन्म, जाति, भाषा, स्थान, संपत्ति या सामाजिक स्थिति के आधार पर नहीं होता। उसका महत्व उसकी कर्मशीलता पर निर्भर करता है। पूरे राष्ट्र के उत्थान के लिये सामाजिक समरसता की भावना ही सबसे बड़ी शक्ति है। सम्मेलनों के बाद विभिन्न बस्तियों में स्थानीय स्तर आपसी विवाद को परस्पर बातचीत से विराम देने के समाचार भी आने लगे। जिससे भारत के भविष्य निर्माण के लिये एक अच्छा वातावरण बनता दिखाई दे रहा है। ■

राष्ट्र आराधना की प्रेरणा देते संघ गीत

अशोक कुमार सिन्हा
उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदू समाज को संगठित कर उसे शक्तिशाली, सामर्थ्य संपन्न बनाना चाहता है। संघ का कार्य एक सार्वजनिक कार्य है। संघकार्य की चेतनाशक्ति उसके कार्यकर्ता अर्थात स्वयंसेवक हैं। प्रतिदिन लगने वाली शाखा उसकी कार्यपद्धति है जिसकी पांच विशेषताएं हैं। पहली दैनिक, दूसरी एक घंटे का कार्यक्रम, तीसरी सर्व दूर, चौथी सभी के लिए और पांचवीं सामान्य कार्यक्रम। प्रयास यह होता है कि जहां हिंदू हो वहां शाखा लगे। कहीं पर भी जाइए वहां शाखा हो सकती है। कार्यकर्ता इन्हीं शाखाओं पर तैयार या उत्पादित होते हैं। संघ स्थान की मिट्टी में कार्यकर्ताओं की फसल उगती है। यह कार्यकर्ता समूह में कार्य करने वाला होता है। इस कार्यपद्धति को व्यक्ति निर्माण की संज्ञा मिली है।60 मिनट की सुनियोजित शाखा में शक्ति की उपासना, अनुशासन, विजिगीषु वृत्ति और देशभक्ति की भावना स्वयंसेवक में विकसित होती है। वह एक सज्जन शक्ति का समुच्चय बन कर उभरता है। शाखा में योग, सूर्यनमस्कार, दौड़, दंड प्रहार, प्राथमिक समता, खेलकूद, देशभक्ति के गीत, अमृत वचनों के साथ मातृभूमि की प्रार्थना की जाती है। संघ के गीत राष्ट्र आराधना की प्रेरणा देते हैं। ये गीत संदेशयुक्त प्रेरणादायी और हृदयग्राही होतें है। शब्द इतने सरल, स्पष्ट, मन को छूनेवाले होते हैं तथा सामूहिक गायन के रूप में गाते-गाते हृदय में भावना भर कर कभी-कभी आंसू भी छलका देते हैं। इसकी एक ही धुन होती है जो जय-जय भारत के अर्थ समेटे होती है। समूहगान होने से हर कार्यकर्ता इसको निःसंकोच भाव से स्वतः गाना, गुनगुनाना सीख जाता है। उच्चस्वर में वह बेझिझक होकर गाने लगता है। धीरे-धीरे वह सबके सामने खड़े होकर सबके सामने गाता और गाते हुए दूसरों को अनुसरण कराना सीख जाता है। यह गीत कौन लिखता है, कब लिखता है, कहां लिखता है, यह पता ही नहीं चलता है क्योंकि रचनाकार स्वयंसेवक व प्रचारकों में से ही होते है परंतु वे कभी भी अपना नाम उजागर नहीं करते या कहिये की वे श्रेय नहीं लेना चाहते हैं। इन गीतों में देशप्रेम की अभिव्यक्ति, मातृभूमि से गहरा प्रेम, सम्मान, समर्पण, त्याग और बलिदान की भावना भरी होती है। इन गीतों को गणगीत कहा जाता है। कुछ स्वयंसेवक जिनका स्वर बहुत अच्छा होता है वे अभ्यास कर के संघ उत्सवों या विशेष अवसरों पर मुख्य वक्ता के भाषणों, जिन्हें संघ में बौद्धिक कहा जाता है, के ठीक पहले भाव उत्पन्न करने, श्रोताओं को एकाग्र करने तथा वक्ता कें लिए मार्गदर्शक विंदु या प्रस्तावना के रूप में एकल गीत के रूप में भी गाये जातें हैं। यह गीत कोरस नहीं होता। इस गीत को एक स्वयंसेवक ही पूर्ण आत्मविश्वास के साथ व्यवस्थित अभ्यास के बाद बिना किसी पार्श्व संगीत के गाता है। उल्लेखनीय है कि संघ के किसी गीत में किसी भी प्रकार के वाद्यसंगीत के उपकरणों का प्रयोग नहीं किया जाता है। सभी गीत सुर, ताल, लय, छंद एवं संगीत की शास्त्रीय पद्धतियों से युक्त होते हैं। संघ गीत भारतवर्ष में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में लिखे और गाए जातें हैं और देश - विदेश की सभी शाखाओं पर सब भारतीय भाषाओं के गीत गाये और दुहराए जातें है। संस्कृत और हिंदी के गीत अधिकांश संख्या में सभी भाषा-भाषी प्रदेशों के स्वयंसेवक निश्छल भाव से गाते मिल जाएंगे। स्वयंसेवकों के अंदर स्वाभाव से ही भाषा, प्रांत, जाति, क्षेत्रीयता का भेद संस्कारवश नहीं पनपने पाता तथा वे अपने अंदर सभी भाषाओं के प्रति आदर और प्रेम की भावना स्वभाववश रखने लगते हैं।

सामान्यतः संघ गीतों को मातृ-वंदना, राष्ट्र-अर्चना, केशव माधव वंदन, पथ संचलन गीत, सहगान, एकल गान, जनजागरण का शंखनाद करते गीत, संघ

उत्सवों के भाव अनुरूप गीत तथा प्रासंगिक एवं विविध गीतों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। संघ गीत जहां राष्ट्रीय एकता और अखंडता का संदेश देते हैं वहीं यह जाति, धर्म भाषा के उपर राष्ट्रीय एकता को महत्व देते हैं। उत्साह और प्रेरणा के साथ-साथ जनमानस में साहस, जोश, कर्तव्यबोध, गौरवशाली इतिहास, भारतीय संस्कृति, स्वर्णिम अतीत, संघर्ष और हिंदू उपलब्धियों का चित्रण भी करते हैं। संघ गीतों की सरल प्रभावशाली भाषा ओजपूर्ण राष्ट्रीयता का संदेश देने वाली होती है। यह स्वयंसेवकों और सामान्य जनमानस में नैतिक मूल्यों का संचार करने के साथ-साथ उनमें सत्य, साहस, कर्तव्य, अनुशासन, सेवा, राष्ट्रीय भावना, जिम्मेदारी की भावना जैसे आदर्शों को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। संघ के सौ वर्षों की यात्रा में इन गीतों ने पाथेय बनने के साथ-साथ राष्ट्र जागरण का अनुपम कार्य किया है।

पूरे विश्व में संघ की शाखाओं पर प्रतिदिन परमपवित्र तत्वज्ञान के रूप में गुरु स्थान पर विराजित भगवा ध्वज के समक्ष आज जो प्रार्थना संस्कृत भाषा में गायी जाती है वह 1925 में पहले मराठी और हिंदी में गायी जाती थी। वह प्रार्थना संघ स्थापना के 14 वर्ष बाद फरवरी 1939 में नागपुर के सिंदरी बैठक में डा. बाबा साहेब आप्टे, बालासाहेब देवरस, अप्पाजी जोशी तथा नानासाहेब टालातुले की उपस्थिति में नरहरि नारायण भिड़े द्वारा संस्कृत भाषा में रूपांतरित किया गया जो 23 अप्रैल 1940 में पुणे के संघ शिक्षा वर्ग में यादवराव जोशी द्वारा गाया गया। इसमें कुल तीन श्लोक में तेरह पंक्तियां हैं जिसकी अंतिम पंक्ति हिंदी भाषा में भारत माता की जय से पूर्ण होता है। इसका प्रथम श्लोक भुजंग प्रयात छंद में रचित है जिसमें मातृवंदना की गई है। द्वितीय एवं तृतीय श्लोक मेघ निर्घोष छंद में रचित है। द्वितीय श्लोक में ईश्वर से अजेय शक्ति, सुशीलता, ज्ञान, वीरव्रत और अक्षय धेययनिष्ठा जैसे पाँच गुणों की माँग की गई है। तृतीय श्लोक में ध्येय की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त करने की प्रार्थना की गई है। इस प्रार्थना को अभी हाल में ही स्वप्रेरणा से सुमधुर संगीत में पिरो कर वाद्य यंत्रों की ध्वनि के साथ प्रसिद्ध फिल्मी जगत के संगीतकार एवं गायक शंकर महादेवन नें बड़ी सावधानी के साथ उसी स्वर में गाने का प्रयास किया है जैसी प्रार्थना सस्वर स्वयंसेवक संघस्थान पर गाते हैं। सोशल मीडिया पर यह प्रार्थना गीत बहुत प्रसारित भी हुआ है। कुछ संघ गीतों का सहजरूप में टीवी चैनलों के लिए बनाई गई फिल्मों में भी प्रयोग सामयिक संदर्भों के उपयोगिता की दृष्टि से किया गया है जो संघ गीतों के महत्व का प्रतीक है जैसे उदाहरण स्वरूप प्रसिद्ध टीवी सीरियल "चाणक्य" में एक पुराने संघ गीत "हम करें राष्ट्र आराधन, तन से मन से धन से, तन मन धन जीवन से" को तक्षशिला के छात्रों द्वारा भगवा ध्वज हाथ में लहरा कर गाते हुए दर्शाया गया है। कदाचित जब इस सीरियल का प्रोमो दूरदर्शन को सीरियल के निर्देशक चंद्र प्रकाश द्विवेदी द्वारा आगे के एपिसोड फिल्माने की स्वीकृति के लिए जमा किया गया तब उस समय की तत्कालीन नरसिंहाराव सरकार के अधीन दूरदर्शन नें बिना कारण बताए बहुत दिनों तक स्वीकृति से रोक दिया था। विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी ने तब नरसिंहाराव जी से व्यक्तिगत रूप से मिलकर फिल्म प्रोमो को देखने और राष्ट्रीय और सांस्कृतिक महत्व के होने के कारण स्वीकृति देने की तथा अस्वीकृति की दशा में राष्ट्रव्यापी आंदोलन करने की बात कही थी। अनुरोध को स्वीकार कर नरसिंहाराव जी ने दूरदर्शन से मंगाकर प्रोमो को देखा तथा कोई आपत्तिजनक विषयवस्तु को न पाकर आगे की फिल्मांकन की अनुमति प्रदान कराई। बाद में जब पूरी फिल्म बन कर प्रदर्शित हुई तो रामायण महाभारत सीरियल के बाद सबसे लोकप्रिय सीरियल सिद्ध हुई और संदर्भित संघ गीत भी दर्शकों में बहुत लोकप्रिय हुआ।

संघ शाखाओं पर गाये जाने वाले अनेक गीत हैं जो राष्ट्र के लिए जीने की प्रेरणा देतें हैं यथा - "धर्म के लिए जियें समाज के लिए जियें। ये धड़कने ये श्वास हो पुण्यभूमि के लिए। कर्म भूमि के लिए "।। इसी प्रकार का दूसरा गीत है - "आर्य भूमि में गूंज उठा फिर जन-जन का आह्वान । भरत भूमि के साथ विश्व का करना है कल्याण। जागे वीर जवान-जागे वीर जवान ।।" एक अन्य गीत है - "एक संस्कृति एक धर्म है, एक हमारा नारा। एक भारती की संतति हम, भारत एक हमारा" ।। इसी प्रकार यह गीत भी बहुत लोकप्रिय था "नमन है इस मातृभू को, विश्व का सिरमौर भारत। तप तपस्या साधना का, शौर्य का परिणाम भारत ।।" जीवन पुष्प चढ़ायेंगे, माँ की ज्योति जगायेंगे। माँ की रक्षा हित हम शत-शत, हिंदू बलि हो जाएँगे।।

सामाजिक समरसता को प्रेरित करता यह गीत बहुत प्रसिद्ध है- पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं सिंहासन चढ़ते जाना, सब समाज को लिए साथ में, आगे है बढ़ते जाना।। इसी प्रकार का एक गीत है- हिन्दु जगे तो विश्व जगेगा, मानव का विश्वास जगेगा। भेद भावना तमस हटेगा, समरसता अमृत बरसेगा।। संस्कृत भाषा में एक गीत सबको स्मरण होगा - मनसा सततम स्मरणीयम, बचसा सततम वदनीयम। लोकहितम मम करणीयम ।। एक गीत जो बचपन में शरीर में रक्तसंचार को बढ़ा देता था - रक्त शिराओं में राणा का, रह-रह आज हिलोरें लेता। मातृभूमि का कण-कण तृण-तृण हमको आज निमंत्रण देता ।। दूसरा गीत है- यह हिमालय सा उठा, मस्तक न झुकने पाएगा। रोक दूँगा मैं प्रभंजन, जो प्रलय के गीत गाता।। पंजाबी भाषा का एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था -पिता वारया ते लाल चारे वारे, ओ हिन्दु तेरी शान बदले। जन्म गुरांदा पटने साहिबदा, आनंदपुर डेरा लाया, ओ हिंदु तेरी शान बदले।

संघ गीत की अनेकों शृंखलाएं हैं जिनको सुनते गाते हम संस्कारित हुए हैं। भावी पीढ़ी नए तकनीकी से दृश्य श्रव्य माध्यम से इन गीतों को देखेगी, सुनेगी और प्रेरणा लेगी। ■

'लखनपुर' से सात समुंदर पार तक 'उत्तर प्रदेश दिवस' की धमक

अतुल मोहन
स्थानीय संपादक, स्वदेश

त्रिनिदाद और टोबैगो में यूपी दिवस समारोह

उत्तर प्रदेश दिवस-2026 के तीन दिवसीय समारोह (24-26 जनवरी) की शुरुआत के साथ ही प्रदेश की सांस्कृतिक चेतना ने भौगोलिक सीमाओं से आगे बढ़कर राष्ट्रीय और वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त पहचान दर्ज कराई है। लखनपुर से सात समंदर पार तक यूपी दिवस की धमक महसूस की गई। उद्घाटन दिवस पर उत्तर प्रदेश दिवस का उत्सव न केवल प्रदेश के कोने-कोने में, बल्कि देश के विभिन्न राज्यों और दुनिया के अनेक देशों में भी आयोजित किया गया। यह व्यापक सहभागिता उत्तर प्रदेश के प्रवासी समुदाय के गहरे सांस्कृतिक जुड़ाव, प्रदेश की समृद्ध विरासत-परंपराओं और आधुनिक भारत में उसकी बढ़ती भूमिका को रेखांकित करती है। रूस की राजधानी मास्को में पत्रकार डॉ.रामेश्वर सिंह (मूल निवासी सुल्तानपुर) की अगुवाई में यूपी दिवस भव्यता के साथ मनाया गया।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि 24 जनवरी को उत्तर प्रदेश दिवस का उत्सव अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी व्यापक रूप से मनाया गया। आयरलैंड, मालदीव, जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका, रूस, मंगोलिया, सिंगापुर, श्रीलंका और म्यांमार सहित लगभग 15 देशों में हुए कार्यक्रमों में उत्तर प्रदेश से जुड़े प्रवासी समुदाय एवं स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रदर्शनियों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, फिल्म प्रदर्शन और संवादात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विरासत, कलात्मक परंपराओं और विकसित होती पहचान को प्रस्तुत किया गया, जिससे विदेशों में बसे भारतीय समुदायों में गर्व और आत्मीयता की भावना और प्रबल हुई।

दुनियाभर से मिले शुभकामना संदेश : उत्तर प्रदेश दिवस पर यूपी को अंतरराष्ट्रीय मंच से भी गर्मजोशी भरी शुभकामनाएं प्राप्त हुईं। जापान के ओसाका-कोबे, फ्रांस के सेंट डेनिस, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, श्रीलंका के जाफना, यूनाइटेड किंगडम तथा यूरोप के लिथुआनिया में स्थित भारतीय मिशनों एवं वाणिज्य दूतावासों द्वारा भेजे गए संदेशों ने यूपी की वैश्विक पहचान और प्रतिष्ठा को नया आयाम दिया। पर्यटन मंत्री ने जानकारी दी कि दूतावास स्तर पर कार्यक्रमों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और क्यूरेटेड प्रेजेंटेशन शामिल रहे। रूस स्थित भारतीय दूतावास में उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को केंद्र में रखते हुए विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहीं, बर्लिन स्थित भारतीय दूतावास एवं टैगोर सेंटर में प्रदेश की समृद्ध परंपराओं, प्रमुख पर्यटन स्थलों और जीवंत कला रूपों को प्रस्तुत करते हुए उत्तर प्रदेश को परंपरा और प्रगति के संगम के रूप में प्रदर्शित किया गया। मंगोलिया, सिंगापुर, म्यांमार, श्रीलंका, सेंट डेनिस, कांगो डीआर और जाफना से भी इसी प्रकार के आयोजनों की जानकारी आधिकारिक मिशन संचार माध्यमों के माध्यम से प्राप्त हुई। व्यापक जनसंपर्क को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का वीडियो संदेश भी प्रदर्शित किया गया।

उत्तर प्रदेश के लोग अपनी जड़ों से जुड़े हैं

पहले ही दिन उत्तर प्रदेश दिवस का इतने व्यापक स्तर पर मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कि प्रदेश के लोग, चाहे वे कहीं भी निवास करते हों, अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हैं। जिला मुख्यालयों से लेकर वैश्विक महानगरों तक आयोजित कार्यक्रम यह दर्शाते हैं कि उत्तर प्रदेश अपनी विरासत से जुड़कर आत्मविश्वास के साथ अपनी प्रगति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत कर रहा है।' - **जयवीर सिंह, मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश।**

सिंगापुर में यूपी दिवस समारोह

दक्षिण अफ्रीका में यूपी दिवस समारोह

राज्यों में भी मनाया गया यूपी दिवस-2026 : उत्तर प्रदेश दिवस 2026 के पहले दिन देश के लगभग 20 राज्यों में उत्सव का माहौल रहा। वरिष्ठ नेताओं एवं उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में हुए इन कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य की सांस्कृतिक पहचान और विकास यात्रा को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया गया। दिल्ली, तेलंगाना, गुजरात, असम, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, तमिलनाडु और गोवा सहित कई राज्यों में आयोजन हुए। इसके अतिरिक्त, दिल्ली में उपराज्यपाल कार्यालय, मुंबई, आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा और पंजाब समेत अनेक स्थानों पर स्मरणीय कार्यक्रम किए गए, जो यूपी के स्थापना दिवस के प्रति देशव्यापी सहभागिता और एकजुटता को दर्शाते हैं।

पहले दिन 30 जनपदों में मना उत्सव : प्रदेश भर में पहले ही दिन उत्तर प्रदेश दिवस का उत्सव जनपदों में व्यापक रूप से मनाया गया। 24 जनवरी को सिद्धार्थनगर, भदोही, हाथरस, एटा, सोनभद्र, चंदौली, कन्नौज, औरैया, बहराइच, संभल, श्रावस्ती, कानपुर, कुशीनगर, बिजनौर, इटावा, चित्रकूट, गाजीपुर, गोंडा सहित 30 जिलों में कार्यक्रम किए गए। इन आयोजनों में स्थानीय संस्कृति, लोक परंपराएं, सामाजिक पहलें और विकासात्मक उपलब्धियों को केंद्र में रखा गया, जबकि आगामी दो दिनों में और भी कार्यक्रम आयोजित किए जाने हैं।

मुख्य कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री मुख्य अतिथि : 24 जनवरी को राज्य स्तरीय मुख्य कार्यक्रम राजधानी लखनऊ स्थित राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर किया गया, जिसमें केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य एवं ब्रजेश पाठक, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी समेत अन्य वरिष्ठ गणमान्य अतिथियों और राज्य नेतृत्व की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस आयोजन में उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक समृद्धि, विकास यात्रा और भविष्य की आकांक्षाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया।

डबलिन दूतावास में गौरवान्वित हुए 'यूपी वाले' राजदूत अखिलेश मिश्र के नेतृत्व में भारतीय समुदाय ने किया यूपी का गुणगान समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पाककला, शिल्प और पर्यटन की विरासत पर प्रस्तुति उत्तर प्रदेश के पारंपरिक नृत्य, गाने, कविता, कपड़ों और शिल्प का प्रदर्शन किया गया।

डबलिन। आयरलैंड में भारत के राजदूत अखिलेश मिश्र (जन्मभूमि वाराणसी) की अगुवाई में भारतीय समुदाय ने अत्यंत उल्लास और उत्साह से यूपी दिवस मनाया। इस दौरान यहां की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पाककला, शिल्प और पर्यटन की विरासत पर प्रस्तुति के साथ पारंपरिक नृत्य, गाने, कविता और कपड़ों और शिल्प का प्रदर्शन किया गया।

राजदूत अखिलेश मिश्र ने बताया कि आयरलैंड में यूपी के छोटे लेकिन सक्रिय डायस्पोरा को राजदूतावास की गतिविधियों और कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने आयरलैंड में आईटी, फार्मा, फाइनेंस, हेल्थकेयर जैसे सेक्टर में यूपी के प्रोफेशनल्स के योगदान और उत्कृष्टता के माध्यम से बढ़ावा देने के लिए सराहना की। राजदूत मिश्र ने पिछले दशक में यूपी की उल्लेखनीय वृद्धि पर प्रकाश डाला। यूपी न केवल भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है, बल्कि इसने इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। यह सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पर्यटन का एक जीवंत केंद्र भी बनकर उभरा है। यूपी में विकास से आयरलैंड के लिए व्यापार, निवेश, शिक्षा और पर्यटन के क्षेत्र में अनेक अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। इस संदर्भ में, उन्होंने यूपी के प्रतिनिधियों से आयरलैंड और उत्तर प्रदेश के बीच एक कड़ी बनने और द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने में भूमिका अदा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजदूत मिश्र ने इस बात पर जोर दिया कि गणतंत्र दिवस मनाने की सार्थकता इसी में है कि सभी भारतीय संविधान के मूल्यों और आदर्शों के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करें। भारतीय संविधान ही प्रजातंत्र का आधार है। वही हमारे अधिकारों का भी स्रोत है। अधिकार कर्तव्य का ही दूसरा पक्ष है; अधिकार तभी सुरक्षित रह सकते है जब पूरा समाज अपने कर्तव्य निभाए। ■

यूपी की विविधता को विश्व पटल पर पहुंचाया

'राज्य नेतृत्व की दूरदर्शी परिकल्पना को साकार करते हुए उत्तर प्रदेश दिवस ने इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सशक्त पहचान बनाई है। भारतीय मिशनों और दूतावासों की सक्रिय सहभागिता से हुए कार्यक्रमों ने न केवल प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक दर्शकों से जोड़ा, बल्कि शिल्प, व्यंजन और पर्यटन संभावनाओं के माध्यम से उत्तर प्रदेश की विविधता को विश्व पटल पर प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।'- **अमृत अभिजात, अपर मुख्य सचिव पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मार्थ कार्य, उत्तर प्रदेश।**

छत्रपति शिवाजी महाराज

स्वराज्य की अवधारणा, राज्यदर्शन और भारतीय राजनीतिक चेतना

शीतल गहलोत
लेखिका

भारतीय इतिहास में छत्रपति शिवाजी महाराज का व्यक्तित्व केवल एक वीर योद्धा या क्षेत्रीय शासक के रूप में सीमित नहीं किया जा सकता। वे एक ऐसे युगपुरुष थे जिन्होंने राजनीतिक सत्ता को नैतिकता, संस्कृति और जनकल्याण से जोड़कर स्वराज्य की एक मौलिक भारतीय अवधारणा प्रस्तुत की। 17वीं शताब्दी का भारत विदेशी सत्ता, धार्मिक असहिष्णुता, आर्थिक शोषण और सामाजिक असुरक्षा से ग्रस्त था। ऐसे समय में शिवाजी महाराज का उदय केवल राजनीतिक विद्रोह नहीं, बल्कि भारतीय आत्मचेतना का पुनर्जागरण था।

शाह जी महाराज और जीजाबाई के पुत्र शिवाजी का जन्म पुणे के पास शिवनेरी के दुर्ग में हुआ था। प्रताप की भांति शिवाजी भी राष्ट्रीयता के जीवंत परिचायक थे। शिवाजी का सारा संघर्ष उस कट्टरता और उद्दंडता के विरुद्ध था, जिसे औरंगजेब जैसे घिनौने शासकों और इसकी छत्रछाया में पलने वाले लोगों ने अपना रखा था। 1674 की ग्रीष्म ऋतु में शिवाजी ने धूमधाम से सिंहासन पर बैठकर स्वतंत्र भारत की नींव रखी, और जनता को भय मुक्त किया। उनका बचपन अपनी मां के मार्गदर्शन में बीता। वे धार्मिक स्वभाव वाली वीरांगना नारी थीं। उन्होंने बालक शिवा को रामायण महाभारत और अन्य वीर आत्माओं की कहानी सुना कर बड़ा किया। दादा कोंड देव के संरक्षण में उन्हें सभी सामयिक युद्ध और विधाओं में निपुण बनाया। संत रामदेव के संपर्क में आने से शिवाजी पूर्णतया राष्ट्र प्रेमी कर्तव्य परायण और कर्मठ योद्धा बने। बचपन में ही शिवाजी किला जीतने का खेल खेला करते थे। युवावस्था में आते ही उनका खेल वास्तविक कर्म बनकर शत्रुओं पर आक्रमण करके किले जीतना बन गया। पुरंदर और तोरण जैसे किलों पर अधिकार जमाते ही अत्याचारी शासक चिंतित हो गए। शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र संभाजी महाराज

उनके उत्तराधिकारी थे। संभाजी को विश्व का प्रथम बाल साहित्यकार माना जाता है। 14 वर्ष की आयु तक बुध भूषण (संस्कृत) नखशिख (हिंदी) नायिका भेद, सातसतक इत्यादि ग्रंथों की रचना करने वाले संभाजी विश्व के प्रथम बाल साहित्यकार बने। मराठी, हिंदी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, कन्नड़ आदि भाषाओं पर उनका प्रभुत्व था। शिवाजी के बढ़ते प्रताप से आतंकित बीजापुर का शासक आदिलशाह जब शिवाजी को बंदी ना बना सका, तो उसने शिवाजी के पिता शाह जी को बंदी बना लिया। शिवाजी ने नीति और साहस का परिचय देते हुए छापामारी युद्ध नीति से पिता को आजाद कराया। तब बीजापुर के शासक ने शिवाजी को जीवित अथवा मृत पकड़ लाने का आदेश देकर अपने मक्कार सेनापति अफजल खान को भेजा। उसने भाईचारे और सुलह का झूठा नाटक रच कर शिवाजी को अपनी बाहों की घेरे में लेकर मारना चाहा, पर रणनीतिकार शिवाजी ने अपने हाथ में छिपे बघनखे से उसको मौत के घाट उतार दिया। पुरंदर के किले को बचा पाने में असमर्थ जानकर शिवाजी ने महाराज जय सिंह से पुरंदर की संधि कर ली। मराठा सैन्य व्यवस्था के विशिष्ट लक्षण थे उनके किले। विवरण कारों के अनुसार शिवाजी के पास 250 किले थे। जिनकी मरम्मत पर वह बड़ी रकम खर्च करते थे। शिवाजी ने कई दुर्गों पर अधिकार किया। जिनमें से एक था सिंहगढ़ दुर्ग। जिसे जीतने के लिए उन्होंने तानाजी मालसुरे को भेजा था। इस दुर्ग को जीतने के दौरान तानाजी ने वीरगति पाई। (गढ़ आल्हा पण सिंह गेला) गढ़ तो हमने जीत लिया पर सिंह हमें छोड़कर चला गया। आगरा के दरबार में शिवाजी औरंगजेब से मिलने के लिए पहुंचे। उचित सम्मान न मिलने पर औरंगजेब को उन्होंने विश्वास घाती कहा। जिसके परिणाम स्वरुप औरंगजेब ने शिवाजी और उनके पुत्र संभाजी को जयपुर भवन में कैद कर लिया।

शाह जी महाराज और जीजाबाई के पुत्र शिवाजी का जन्म पुणे के पास शिवनेरी के दुर्ग में हुआ था। प्रताप की भांति शिवाजी भी राष्ट्रीयता के जीवंत परिचायक थे। शिवाजी का सारा संघर्ष उस कट्टरता और उद्दंडता के विरुद्ध था, जिसे औरंगजेब जैसे घिनौने शासको और इसकी छत्रछाया में पलने वाले लोगों ने अपना रखा था। 1674 की ग्रीष्म ऋतु में शिवाजी ने धूमधाम से सिंहासन पर बैठकर स्वतंत्र भारत की नींव रखी और जनता को भय मुक्त किया।

वहां से शिवाजी 13 अगस्त 1666 ई० को फलों की टोकरी में छिपकर फरार हो गए और रायगढ़ पहुंचे। शिवाजी गोरिल्ला युद्ध के आविष्कारक थे। इस युद्ध का उल्लेख उस काल में रचित शिव सूत्र में मिलता है। यह एक छापामार युद्ध प्रणाली थी। हिंदू पद पादशाही के संस्थापक विख्यात समर्थ गुरु रामदास उनके गुरु थे। संपूर्ण भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक उन्होंने 1100 मठ तथा अखाड़े स्थापित किए। स्वराज स्थापना के लिए लोगों को प्रेरित किया। अखाड़े की स्थापना का श्रेय उन्हें ही जाता है। शिवाजी हनुमान भक्त समर्थ गुरु रामदास की आज्ञा से ही कार्य करते थे। शिवाजी को महान शिवाजी महाराज बनाने में उनके गुरु का ही योगदान था। छत्रपति शिवाजी महाराज की कुलदेवी मां तुलजा भवानी महाराष्ट्र के तुलजापुर में स्थापित हैं। वह उन्हीं की उपासना करते थे। मान्यता है कि शिवाजी को खुद मां ने प्रकट होकर तलवार प्रदान की थी। यह तलवार लंदन के संग्रहालय में रखी है। शिवाजी महाराज के लिए स्वराज केवल सत्ता नहीं संस्कार था।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन इस सत्य का सजीव प्रमाण है कि राष्ट्र की रक्षा केवल शस्त्र और शास्त्रों से नहीं अपितु दोनों के समन्वय से ही सुदृढ़ और स्थायी स्वराज्य का निर्माण होता है। शास्त्र उन्हें विवेक, धर्म और नीति प्रदान करते थे, तो शस्त्र अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस। शिवाजी महाराज ने कभी शास्त्र को शस्त्र से पृथक नहीं माना।

उनकी दृष्टि में शस्त्र का प्रयोग तभी धर्मसंगत था, जब वह शास्त्रसम्मत हो जब उसका उद्देश्य विजय नहीं, बल्कि न्याय हो। यही कारण है कि उनका स्वराज्य केवल शक्ति का विस्तार नहीं बना, बल्कि संस्कारों से सिंचित राष्ट्रचेतना का आधार बना। शिवाजी महाराज ने यह सिखाया कि बिना शास्त्र के शस्त्र क्रूरता बन जाता है और बिना शस्त्र के शास्त्र निष्क्रिय आदर्श रह जाता है।

अतः शिवाजी महाराज की महानता इसी संतुलन में निहित है। उन्होंने भारत को यह अमूल्य संदेश दिया कि जब शास्त्र दिशा दें और शस्त्र उसकी रक्षा करें, तभी राष्ट्र आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी और चिरस्थायी बनता है। यही शिवाजी महाराज का स्वराज्य था। जहां शास्त्र और शस्त्र दोनों राष्ट्रधर्म के समान स्तंभ थे। ■

भारत की संसदीय विरासत और ग्लोबल साउथ की मजबूत आवाज

28वीं राष्ट्रमंडल अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन (सीएसपीओसी)

डॉ. गायत्री दीक्षित
जेएनयू

भारत में आयोजित होने वाला यह 28वां राष्ट्रमंडल अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन एक महत्वपूर्ण आयोजन है। यह आयोजन भारत की संसदीय विरासत को प्रदर्शित करता है और वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूती से उठाता है। इस सम्मेलन में दुनिया भर के संसदीय नेता एकत्र होते हैं। यहां वे अपने अनुभव साझा करते हैं और साझा चुनौतियों के समाधान पर चर्चा करते हैं। यह आयोजन न केवल भारत की संसदीय विरासत को प्रदर्शित करता है, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज को भी मजबूती से उठाता है। इस सम्मेलन में भारत की संसदीय प्रणाली की विरासत और इसकी विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा की गई। यह प्रणाली वैश्विक दक्षिण के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है, जो उन्हें अपने देशों में संसदीय प्रणाली को मजबूत करने के लिए प्रेरित करती है। यह आयोजन न केवल भारत की संसदीय परंपरा को दिखाएगा, बल्कि वैश्विक दक्षिण के देशों के बीच सहयोग और समझ बढ़ाने में भी बहुत महत्वपूर्ण काम करेगा। इससे इन देशों को अपनी संसदीय प्रणाली को और मजबूत करने में मदद मिलेगी और वे एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकेंगे।

28वीं राष्ट्रमंडल अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन एक महत्वपूर्ण मंच है जहां विश्व के विभिन्न हिस्सों के नेता एक साथ आते हैं और अपने देशों की संसदीय प्रणालियों में सुधार लाने के लिए नए विचारों और रणनीतियों पर चर्चा करते हैं। यह सम्मेलन निश्चित रूप से वैश्विक स्तर पर संसदीय सहयोग को मजबूत करने और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण योगदान करेगा। 28वीं राष्ट्रमंडल अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन (सीएसपीओसी) हाल ही में नई दिल्ली में 14 से 16 जनवरी 2026 तक हुआ। यह तीन दिन का आयोजन भारत के लिए काफी खास था, क्योंकि यह चौथी बार था जब भारत ने इसकी मेजबानी की पहले 1971, 1986 और 2010 में हो चुका था। इस बार की खास बात यह रही कि इसमें अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी देखने को मिली। कुल 42 राष्ट्रमंडल देशों और 4 अर्ध-स्वायत्त संसदों के 61 स्पीकर्स और पीठासीन अधिकारी शामिल हुए। यह सम्मेलन हर दो साल में होता है और इसका मकसद राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के बीच अनुभव साझा करना, चुनौतियों पर बात करना और लोकतंत्र को मजबूत बनाने के तरीके तलाशना है। 1969 में कनाडा के स्पीकर लुसियन लामोरेक्स ने इसकी शुरुआत की थी, तब से यह मंच संसदीय सहयोग का एक मजबूत जरिया बना हुआ है।

भारत की मेजबानी और खास महत्व : भारत की संसदीय परंपरा प्राचीन वैदिक युग से जुड़ी हुई है। उस समय में, सभाएं और समितियां बहुत महत्वपूर्ण थीं। वे निर्णय लेने की प्रक्रिया में बड़ा योगदान करती थीं। यह परंपरा आज भी जारी है और संसद में विभिन्न राजनीतिक दलों के सदस्य मिलते हैं और देश के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। इन सभाओं और समितियों में लोग अपने विचार साझा करते हैं और चर्चा करते हैं। इससे देश के विकास और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूती मिलती है। यह परंपरा हमारे देश की लोकतांत्रिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भारत में यह आयोजन इसलिए भी यादगार रहा क्योंकि यह हमारी संसदीय विरासत को दुनिया के सामने रखने का मौका था। हमारी लोकतांत्रिक परंपरा बहुत पुरानी है वैदिक काल की सभाओं और समितियों से लेकर आज की संसद तक। 1950 में संविधान लागू होने के बाद भारत ने दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बनकर दिखाया कि विविधता में एकता कैसे संभव है। संविधान ने हमें समानता, न्याय और अभिव्यक्ति की आजादी

जैसे मूल अधिकार दिए, जो आज भी हमारी ताकत हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 जनवरी को संविधान सदन के ऐतिहासिक केंद्रीय हॉल में सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि भारत ने अपनी विविधता को लोकतंत्र की ताकत बना लिया है। लोकतंत्र हमारे खून में, हमारी सोच में और संस्कारों में बस्ता है। उन्होंने बताया कि मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं की वजह से भारत ने स्थिरता, गति और बड़े पैमाने पर काम करने की क्षमता दिखाई है। भारत ने वैक्सीन उत्पादन में दुनिया में नंबर एक का स्थान हासिल किया, स्टील उत्पादन में दूसरे नंबर पर है, और UPI जैसी डिजिटल भुगतान प्रणाली ने पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई। पिछले कुछ सालों में करीब 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले। यह सब लोकतंत्र के नतीजे हैं, जहां लोग शासन के केंद्र में होते हैं। प्रधानमंत्री ने ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करने पर जोर दिया। भारत हर वैश्विक मंच पर विकासशील देशों के मुद्दों को उठाता है, जैसे G20 में किया था। उन्होंने कहा कि भारत वैश्विक चुनौतियों के समाधान दे रहा है और राष्ट्रमंडल के साथ मिलकर काम करने को तैयार है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सम्मेलन की अध्यक्षता की और कई मौकों पर भारत की संसदीय यात्रा पर बात की। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक संस्थाएं तभी मजबूत रहती हैं जब वे पारदर्शी, समावेशी और लोगों के प्रति जवाबदेह हों। बिरला ने जोर दिया कि आज के डिजिटल दौर में गलत सूचना, साइबर अपराध और सामाजिक विभाजन जैसी समस्याओं से निपटने के लिए सभी को मिलकर काम करना होगा।

मुख्य चर्चाएं और विषय : सम्मेलन में सबसे ज्यादा बात डिजिटल परिवर्तन पर हुई। खास तौर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और सोशल मीडिया के संसद में इस्तेमाल पर गहन चर्चा हुई। एक सत्र में AI के नैतिक उपयोग पर फोकस था। यह कैसे पारदर्शिता, दक्षता और जवाबदेही बढ़ा सकता है, लेकिन दुरुपयोग के खतरे भी हैं। सोशल मीडिया से गलत जानकारी तेजी से फैलती है, जो लोकतंत्र को कमजोर कर सकती है। इसलिए सांसदों को ज्यादा प्रभावी बनाने, नागरिकों को शामिल करने और संसद की भूमिका को डिजिटल युग में मजबूत करने पर विचार हुए।

नागरिक भागीदारी एक बड़ा मुद्दा रहा। सिर्फ वोट देने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, लोगों को संसद की गतिविधियों में हिस्सा लेने का मौका मिलना चाहिए। भारत के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उदाहरण दिया गया, जिसने सरकारी सेवाओं को आम आदमी तक आसानी से पहुंचाया और उन्हें सशक्त बनाया। पंचायती राज जैसी व्यवस्था से ग्रामीण स्तर पर लोकतंत्र मजबूत हुआ है, जहां महिलाओं की बड़ी भूमिका है।

ग्लोबल साउथ के देशों ने अपनी आवाज बुलंद की। अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के विकासशील देश जलवायु परिवर्तन, गरीबी और असमानता जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। यह सम्मेलन उत्तरी देशों के वर्चस्व को चुनौती देते हुए दक्षिण की आवाज को मजबूत करने का मंच बना।

समापन और आगे की राह : 16 जनवरी को समापन सत्र में ओम बिरला ने 29वीं सीएसपीओसी की जिम्मेदारी यूके के स्पीकर लिंडसे होयल को सौंपी। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन लोकतांत्रिक विचारों के आदान- प्रदान की परंपरा को और मजबूत करने में कामयाब रहा। दूसरे देशों के प्रतिनिधियों ने भारत की मेजबानी की खूब तारीफ की और कहा कि यह वैश्विक चुनौतियों से निपटने में बहुत उपयोगी साबित हुआ।

यह सम्मेलन बस एक आम बैठक नहीं था यह सच में कुछ खास था। तीन दिन की बातचीत के बाद सबने मिलकर ये महसूस किया कि बात करके, एक-दूसरे के अनुभव सुनकर दुनिया की बड़ी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। भारत ने अपनी पुरानी संसदीय परंपरा, डिजिटल ताकत (जैसे UPI और e-Parliament) और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली सोच को सबके सामने रखा। लेकिन साथ ही ये भी समझ आया कि हमारा तरीका हर देश के लिए कॉपी-पेस्ट नहीं किया जा सकता। हर जगह की अपनी परिस्थितियां, अपनी चुनौतियां होती हैं। इसलिए बेहतर ये है कि हम अपना अनुभव शेयर करें, और बाकी देश अपनी जरूरत के हिसाब से उसे अपनाएं बिना जबरदस्ती के। डिजिटल दौर में AI और सोशल मीडिया जैसे टूल बहुत काम आ सकते हैं, संसद को तेज, पारदर्शी और बेहतर बना सकते हैं। लेकिन खतरा भी उतना ही है फेक न्यूज, साइबर अटैक, समाज में फूट। इसलिए ऐसे मंचों पर सिर्फ टेक्नोलॉजी अपनाने की बात नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसके साथ नैतिक नियम, अच्छे कानून और जवाबदेही का पूरा ध्यान रखना पड़ेगा। ताकि ये चीजें लोकतंत्र को मजबूत करें, कमजोर न करें।

ये आयोजन ग्लोबल साउथ की बढ़ती ताकत का साफ संकेत था। विकासशील देशों ने अपनी आवाज बुलंद की, और दिखाया कि अब हम सिर्फ सुनने वाले नहीं, बल्कि फैसले में बराबर की हिस्सेदारी चाहते हैं। ओम बिरला जी ने आखिरी दिन कहा कि लोकतंत्र तभी मजबूत और मायने रखता है, जब वो पारदर्शी हो, सबको साथ ले, लोगों की बात सुने और उनके लिए जवाबदेह रहे।

अंत में, ओम बिरला जी ने अगली 29वीं बैठक की जिम्मेदारी यूके के स्पीकर सर लिंडसे होयल को सौंपी। सबने भारत की मेहमान नवाजी और आयोजन की खूब तारीफ की। कुल मिलाकर, ये सम्मेलन उम्मीद की एक नई किरण लेकर आया। अगर ऐसे मंचों पर सिर्फ बातें नहीं, बल्कि असली सहयोग, साझा काम और लंबे रिश्ते बनें, तो लोकतंत्र दुनिया भर में और गहराई से जड़ें पकड़ सकता है खासकर विकासशील देशों में। संसदें सिर्फ आवाज सुनने वाली जगह नहीं रहेंगी, बल्कि लोगों की उम्मीदों और आकांक्षाओं को सच करने वाली ताकत बनेंगी। भारत ने इसमें एक बड़ा, मजबूत कदम उठाया है। और ये सफर अभी जारी रहेगा। ■

बदलती विश्व व्यवस्था और भारत

डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि.

पिछले कुछ दशकों में वैश्विक परिदृश्य में जो परिवर्तन आए हैं, उन्होंने पुराने समीकरणों को पूरी तरह से बदल दिया है। वह समय अब इतिहास की बात हो गई है जब दुनिया केवल एक या दो महाशक्तियों के इर्द-गिर्द घूमती थी। आज हम एक ऐसी बहुध्रुवीय दुनिया (Multipolar World) की ओर बढ़ रहे हैं, जहां शक्ति के कई केंद्र विकसित हो चुके हैं। इसके अलावा पिछले दशकों में हमने देखा कि विश्व व्यवस्था में वैश्विक संस्थानों जैसे कि संयुक्त राष्ट्र संघ, WTO और IMF की भूमिका और प्रभाव भी घटता जा रहा है। उदाहरण के लिए- संयुक्त राष्ट्र, जो कभी वैश्विक गवर्नेंस का एक स्तंभ था, अब पुराना हो चुका है। संयुक्त राष्ट्र रूस-यूक्रेन युद्ध और गाजा संकट जैसे बड़े संघर्षों का समाधान करने में अप्रभावी रहा है। वेनेजुएला पे हुए अमेरिकी हमले के बाद तो उसकी प्रासंगिकता और कम हो गई है।

वर्तमान परिदृश्य में अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस जैसे अन्य पी-5 (P-5) सदस्यों ने वैश्विक व्यवस्था को मजबूत करने की कोशिश नहीं की तथा इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में उठाने के बजाए रूस पर एकतरफा प्रतिबंध आरोपित किये। रूस द्वारा संयुक्त राष्ट्र में इससे संबंधित किसी भी दंडात्मक उपाय पर वीटो किये जाने के बावजूद इसको रोकने के प्रयास बंद नहीं किये जाने चाहिये थे। साथ ही, यूक्रेन को हथियारों की आपूर्ति में वृद्धि संघर्ष विराम को प्रभावित करने के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र में विश्वास को कम करता है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं (Supply Chains) की नाजुकता ने सिखाया है कि ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा के लिए देशों को आत्मनिर्भर होना होगा।

भले ही आने वाले वर्षों में विश्व अधिक प्रतिस्पर्धी, संकुचित और विवादास्पद बनने के लिए अभिशप्त प्रतीत हो रहा हो, फिर भी प्रमुख शक्तियों के सहयोग का तर्क अपरिहार्य बना रहता है। एक नए अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने का कोई भी प्रयास, एक स्थिर, समावेशी और सभी के लिए लाभकारी हो, ऐसी कूटनीतिक और सहयोगात्मक पहल होनी चाहिए।

21वीं सदी का तीसरा दशक वैश्विक राजनीति के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में दर्ज किया जा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जो अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था बनी थी, वह अब तेजी से ढ़ह रही है और उसका स्थान एक नई और अधिक प्रतियोगी जटिल व्यवस्था ले रही है। 2026 के वर्तमान परिदृश्य में, 'बदलती विश्व व्यवस्था' को समझने के लिए तीन प्रमुख रुझान (Trends) सबसे महत्वपूर्ण हैं।

पहली बात की शीत युद्ध की समाप्ति के बाद दुनिया 'एकध्रुवीय' थी, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका एकमात्र महाशक्ति था। लेकिन आज हम एक बहुध्रुवीय विश्व (Multipolar World) में रह रहे हैं। शक्ति के केंद्र अब केवल अमेरिका और रूस ही नहीं, बल्कि चीन, भारत, यूरोपीय संघ और जापान जैसे कई शक्ति केंद्र उभर आए हैं। चीन की सैन्य और आर्थिक शक्ति ने अमेरिका के प्रभुत्व को सीधी चुनौती दी है। एक आर्थिक शक्ति के रूप में भारत के उदय ने वैश्विक राजनीति को प्रभावित किया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति आज वैश्विक मुद्दों जैसे कि पर्यावरण संकट, ऊर्जा सुरक्षा और आतंकवाद पर अपनी निर्णायक भूमिका निभा रही है।

इस दौर में क्षेत्रीय आर्थिक और सुरक्षा गठबंधन की राजनीति में भी बदलाव आया है। वैश्विक वित्तीय संकट, कोविड-19 महामारी और यूक्रेन युद्ध ने पुरानी संस्थाओं

जैसे G7 और UN की सीमाओं को उजागर किया है, जिससे BRICS, G20 और SCO जैसे नए मंच उभर रहे हैं। नाटो जैसे पुराने सुरक्षा गठबंधनों के साथ-साथ अब BRICS, QUAD और शंघाई सहयोग संगठन जैसे नए समूह वैश्विक नीतियों को प्रभावित कर रहे हैं। अब वैश्विक निर्णय केवल वाशिंगटन में नहीं, बल्कि बीजिंग और नई दिल्ली में भी लिए जा रहे हैं। पुरानी संस्थाएं जैसे संयुक्त राष्ट्र (UN) और विश्व व्यापार संगठन (WTO) वर्तमान चुनौतियों का समाधान करने में संघर्ष कर रही हैं।

एक दूसरी प्रवृत्ति जो बदलती विश्व व्यवस्था में देखने को मिल रही है वह आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के बदलते केंद्र से संबंधित है। बदलती विश्व व्यवस्था का सबसे बड़ा संकेत आर्थिक शक्ति का पश्चिम से पूर्व (West to East) की ओर खिसकना है। 21वीं सदी को अक्सर 'एशियाई शताब्दी' कहा जाता है। इस बदलाव की अगुवाई भारत और चीन जैसी आर्थिक शक्तियां कर रही हैं। आज चीन वैश्विक विनिर्माण का एक बड़ा केंद्र बन चुका है। वहीं भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। इसके अलावा दक्षिण-पूर्वी एशिया आसियान देश आर्थिक विकास के नए इंजन बनकर उभरे हैं। विकासशील देशों की आवाज अब वैश्विक मंचों पर अधिक प्रखरता से सुनी जा रही है।

वर्ष 2026 में भारत 6.6 प्रतिशत GDP वृद्धि के साथ सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था रहेगा, जबकि पूर्वी एशिया (चीन सहित) 4.6 प्रतिशत की दर पर अग्रसर है। भारत अब बुनियादी ढांचा निवेश, डिजिटल अर्थव्यवस्था (UPI, AI) और ग्रीन ऊर्जा परियोजनाएं से नए अवसर पैदा कर रहा हैं। मुंबई का GEC 2026 सम्मेलन बहुध्रुवीय दुनिया में पूंजी, तकनीक व ऊर्जा साझेदारी पर केंद्रित है।

तीसरी बात जो बदलता विश्व व्यवस्था में देखने को मिल रही है वह तकनीकी युद्ध और डिजिटल संप्रभुता से संबंधित है। आज की विश्व व्यवस्था केवल भूगोल या सेना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह डेटा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), और सेमीकंडक्टर पर टिकी है। जो देश इन तकनीकों पर नियंत्रण रखेगा, वही भविष्य की व्यवस्था का नेतृत्व करेगा। अमेरिका और चीन के बीच चल रहा 'टेक-वार' इसी का परिणाम है। अब देश 'डिजिटल संप्रभुता' पर जोर दे रहे हैं ताकि वे अपनी तकनीकी निर्भरता को कम कर सकें।

बदलती विश्व व्यवस्था में अब सुरक्षा की परिभाषा बदल गई है। अब केवल सीमा विवाद ही नहीं, बल्कि निम्नलिखित मुद्दे वैश्विक राजनीति के केंद्र में हैं। जलवायु परिवर्तन अब एक बड़ा खतरा बन गया है, जो देशों को सहयोग करने के लिए मजबूर कर रहा है। कोविड-19 ने दिखाया कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला कितनी नाजुक है। आज प्रमुख देश नए सप्लाई चैन नेटवर्क में निवेश और सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके अलावा जीवाश्म ईंधन से नवीकरणीय ऊर्जा (Green Energy) की ओर बढ़ने की होड़ ने नए भू-राजनीतिक तनाव और अवसर पैदा किए हैं। डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (UPI) को 50 से अधिक देशों के साथ साझा कर भारत तकनीकी नेता बन रहा है।

चीन की सैन्य और आर्थिक शक्ति ने अमेरिका के प्रभुत्व को सीधी चुनौती दी है। एक आर्थिक शक्ति के रूप में भारत के उदय ने वैश्विक राजनीति को प्रभावित किया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति आज वैश्विक मुद्दों जैसे कि पर्यावरण संकट, ऊर्जा सुरक्षा और आतंकवाद पर अपनी निर्णायक भूमिका निभा रही है।

भारत की भूमिका : इस बदलती व्यवस्था में भारत एक Leading Power के रूप में उभरा है। आज भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। यह बहुध्रुवीय विश्व चीन के उदय, अमेरिका-रूस तनाव और ग्लोबल साउथ की बढ़ती आवाज के बीच भारत को अवसर प्रदान करता है। 'जी-20' की अध्यक्षता के दौरान भारत ने खुद को 'ग्लोबल साउथ' की आवाज के रूप में स्थापित किया, जो नई विश्व व्यवस्था में उसकी बढ़ती अहमियत को दर्शाता है।

बहुध्रुवीय दुनिया भारत को रक्षा विविधीकरण (रूस, अमेरिका से सौदे) और दक्षिण-दक्षिण सहयोग के अवसर दे रही है। 2026 BRICS अध्यक्षता में वैश्विक संस्था सुधारों की वकालत कर भारत UNSC स्थायी सदस्यता की दिशा मजबूत कर सकता है। रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए आर्थिक एकीकरण और सॉफ्ट पावर (योग, वैक्सीन मैत्री) से भारत बहुध्रुवीय व्यवस्था का प्रमुख पक्ष बन रहा है. इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA) और कोअलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (CDRI) जैसी पहलों से भारत ने जलवायु व आपदा प्रबंधन में अपना नेतृत्व स्थापित किया।

मोदी सरकार की विदेश नीति डी-हाइफेनेशन पर जोर देती है। भारत के हितों के आधार पर संबंध आगे बढ़ाना और बहुपक्षीय संरेखण को अपनाती है ताकि अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता में कठोर गठबंधनों के बिना अपने हितों की रक्षा की जा सके।

भारत की बहुपक्षीय रणनीतियां बदलती विश्व व्यवस्था में रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक प्रभाव को मजबूत करने का माध्यम बनी हुई हैं। भारत विश्व व्यवस्था को एक नियम-आधारित व्यवस्था के रूप में देखता है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत पर आधारित है। ■

जहर पी रहे हैं राजधानी दिल्ली के लोग

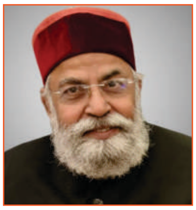

ज्ञानेन्द्र रावत
पर्यावरणविद्

दूषित कहें या फिर जहरीले पानी की आपूर्ति का मसला अकेले इंदौर, गांधीनगर तक ही सीमित नहीं रहा है, इस समस्या से कमोबेश समूचा देश जूझ रहा है। जहां तक देश की राजधानी दिल्ली का सवाल है, वह भी दूषित पेयजल की समस्या से अछूती नहीं है। यहां के निवासियों को भी साफ और शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। अनुमान है कि राजधानी की लगभग 30 प्रतिशत आबादी ऐसे पानी का उपयोग करने को विवश है जो स्वास्थ्य मानकों के अनुरूप नहीं है। गौरतलब है कि स्वच्छ पेयजल में टीडीएस की आदर्श मात्रा 300 से 350 पी पी एम के बीच है जिसमें 100 से 150 पी पी एम सबसे अच्छा मानक माना जाता है। जबकि 500 से अधिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और जब टीडीएस 2000 पीपीएम से ऊपर पहुंच जाये तो पानी पीने योग्य नहीं रहता। दिल्ली में टीडीएस की मात्रा सामान्यतः 900 के पार है। उदाहरण के तौर पर भलस्वा डेरी क्षेत्र के एक घर में पानी में टीडीएस 968 पाया गया। ऐसी स्थिति में दूषित जल विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

दूषित पानी में मौजूद बैक्टीरिया, वायरस और परजीवी विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के लिए जोखिमपूर्ण होते हैं। इसके अलावा फ्लोराइड, नाइट्रेट, आर्सेनिक और अन्य रासायनिक तत्व भी गंभीर स्वास्थ्य प्रभाव डाल सकते हैं। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार दूषित जल के कारण बार-बार दस्त, पेट दर्द, बच्चों में कुपोषण और विकास संबंधी समस्याएं सामने आती हैं। लंबे समय तक दूषित पानी के सेवन से लिवर, किडनी और हड्डियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। हाल के वर्षों में राजधानी के अस्पतालों में डायरिया, टाइफाइड, हेपेटाइटिस, पेट संक्रमण और बच्चों में डिहाइड्रेशन के मामलों में वृद्धि दर्ज की गई है। एम्स दिल्ली में सामुदायिक चिकित्सा विभाग के डा. संजय राय की मानें तो पानी में मिले हैवी मैटल शरीर के हरेक अंग के लिए हानिकारक हैं। इनसे किडनी डैमेज होने, हृदय रोग के अलावा त्वचा और लम्बे समय तक शरीर में इनके पहुंचने पर कैंसर भी हो सकता है। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है।

असलियत में यहां के लोग हर साल दूषित पेय जल की समस्या से दो-चार होते हैं। आज भी यहां जनकपुरी, भलस्वा, चंद्र नगर, अशोक नगर, नारंग कालोनी आदि अनेक इलाकों के लोग दूषित पेयजल मिलने से परेशान हैं। जनकपुरी ए ब्लाक का गंदे पानी की आपूर्ति का मामला अभी भी राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) में विचाराधीन है। एन जी टी की सख्ती के बाद अब कहीं जाकर दिल्ली जल बोर्ड ने सुध ली है और इस इलाके की दशकों पुरानी और छतिग्रस्त पाइप लाइन बदलने का काम शुरू किया है। दिल्ली जल बोर्ड का पानी अक्सर दूषित आता है, इसमें दो राय नहीं है। फिर घरों में पहुंचने वाले पानी की सही ढंग से जांच भी नहीं होती है, इसी वजह से जलजनित बीमारियों का हर समय खतरा बना रहता है। पूर्वी दिल्ली और पुरानी दिल्ली के कुछ इलाकों में बदबूदार या दूषित पानी की शिकायतें समय-समय पर सामने आती रही हैं। कई लोग पीने और खाना बनाने के लिए आरओ, टैंकर या बोतलबंद पानी पर निर्भर हैं, जिससे निजी जल आपूर्ति बाजार का विस्तार भी हुआ है। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि अत्यधिक शुद्ध आरओ पानी भी खनिजों की कमी के कारण स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता।

भूजल प्रदूषण भी राजधानी के लिए एक गंभीर चुनौती है। लैंडफिल साइटों के आसपास भूजल की गुणवत्ता प्रभावित हुई है, जिससे बड़ी आबादी स्वच्छ जल से वंचित है। विधायी और प्रशासनिक मंचों पर भी इस मुद्दे पर चिंता व्यक्त की गई है। पुरानी पाइपलाइन व्यवस्था, जल रिसाव, और जल आपूर्ति नेटवर्क की जर्जर स्थिति को इस समस्या के प्रमुख कारणों में माना जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार जल आपूर्ति प्रणाली के आधुनिकीकरण और निरंतर रखरखाव की आवश्यकता है। दिल्ली सरकार के जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने भी माना है कि दिल्ली में 2800 किलोमीटर लम्बी और तीन दशक से भी पुरानी जर्जर पाइप लाइन से पेयजल दूषित हो रहा है। पानी की बर्बादी का भी यही अहम

कारण है। उनका कहना है कि लम्बे समय से स्वच्छ जल उपलब्ध कराने की दिशा में काम नहीं किया गया। यह समस्या पूर्व सरकारों की लापरवाही, वर्षों की उपेक्षा, अनिर्णय और देरी का नतीजा है। अब राजधानी की पानी की पुरानी पाइप लाइन बदली जायेंगी। इनके बदलने से दूषित पानी की समस्या दूर होगी और जल रिसाव में भी कमी आयेगी। बीते 11 महीनों में हमने इस समस्या के समाधान हेतु काफी कदम उठाये हैं। दिल्ली सरकार और जल बोर्ड केन्द्र सरकार के सहयोग से हर घर तक स्वच्छ एवं सुरक्षित, समान और निरंतर 24 घंटे जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। दिल्ली की समस्या राजनीति से नहीं, नीति और नीयत से सुलझेगी।

यद्यपि आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार राजधानी के अधिकांश घरों तक नल से पानी पहुंचता है, फिर भी कई अनधिकृत कॉलोनियों और झुग्गी बस्तियों में नियमित और सुरक्षित जल आपूर्ति की व्यवस्था एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। कुछ क्षेत्रों में पानी की गुणवत्ता और नियमितता दोनों ही असंतोषजनक बताई जाती हैं।

गौरतलब है कि 2024 में कुल मिलाकर 90,833 मौतें हुयीं जिसमें तकरीबन 24 फीसदी यानी 21,427 मौतें सीधे-सीधे संक्रामक और परजीवी रोग के कारण हुयीं। 2023 में यह आंकड़ा 28.66 फीसदी और 2022 में 26.39 फीसदी रहा है। जाहिर है यह खतरनाक स्थिति है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाये गये तो आने वाले समय में स्थिति और भी भयावह हो जायेगी। यह हालत तब है जबकि दिल्ली में दूषित पानी की आपूर्ति के मामले में दिल्ली हाईकोर्ट और एनजीटी कई बार अपनी नाराजगी जता चुके हैं और आनंद विहार, योजना विहार, जनकपुरी में दूषित पानी का मामला अदालत तक जा पहुंचा है।

यद्यपि आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार राजधानी के अधिकांश घरों तक नल से पानी पहुंचता है, फिर भी कई अनधिकृत कॉलोनियों और झुग्गी बस्तियों में नियमित और सुरक्षित जल आपूर्ति की व्यवस्था एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। कुछ क्षेत्रों में पानी की गुणवत्ता और नियमितता दोनों ही असंतोषजनक बताई जाती हैं।

जल गुणवत्ता की निगरानी के लिए नमूनों की जांच की जाती है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि परीक्षण प्रणाली की पारदर्शिता और मानकीकरण अत्यंत आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं से परीक्षण और स्वतंत्र तकनीकी अध्ययन की आवश्यकता पर भी बल दिया जा रहा है। जल और सीवर नेटवर्क के सुधार के लिए विभिन्न योजनाओं के तहत वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं, लेकिन इनका प्रभावी और पारदर्शी उपयोग सुनिश्चित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

पूर्वी दिल्ली और पुरानी दिल्ली के कुछ इलाकों में बदबूदार या दूषित पानी की शिकायतें समय-समय पर सामने आती रही हैं। कई लोग पीने और खाना बनाने के लिए आरओ, टैंकर या बोतलबंद पानी पर निर्भर हैं, जिससे निजी जल आपूर्ति बाजार का विस्तार भी हुआ है। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि अत्यधिक शुद्ध आरओ पानी भी खनिजों की कमी के कारण स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता।

देखा जाये तो बीती 22 दिसम्बर से 26 दिसम्बर के बीच लिये 7129 पानी के नमूनों में 100 से ज्यादा फेल पाये गये हैं। अब कहा जा रहा है कि आने वाले दिनों में जापान इंटर नेशनल कोआपरेशन एजेंसी और अन्य विशेषज्ञ तकनीकी ऐजेंसियों से जलापूर्ति नेटवर्क का अध्ययन कराया जायेगा। उसकी रिपोर्ट के बाद कदम उठाया जायेगा। सरकार का दावा कि राजधानी में पानी व सीवर की व्यवस्था सुधारने हेतु 68 विधान सभा क्षेत्र में 734 करोड़ की राशि दी गयी है। जानकारी है कि केंद्र सरकार ने राजधानी के हर घर में पेयजल व सीवर लाइन नेटवर्क उपलब्ध कराने के लिए व जलस्रोतों की दशा सुधारने हेतु अमृत 2 योजना के तहत 2800 करोड़ आवंटित किये हैं और 800 करोड़ की लागत से अनधिकृत कालोनियों में सीवर नेटवर्क मजबूत किया जायेगा।

वास्तविकता यह है कि दिल्ली में दूषित पेयजल आपूर्ति और जल अपव्यय की समस्या लंबे समय से बनी हुई है। राजधानी में जल शोधन संयंत्रों से लिए गए कुछ नमूनों के गुणवत्ता मानकों पर खरे न उतरने की जानकारी सामने आई है, जिससे जल गुणवत्ता निगरानी व्यवस्था की प्रभावशीलता पर प्रश्न उठते हैं। केंद्र सरकार की जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए यह आवश्यक है कि जल गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशालाएं एनएबीएल से मान्यता प्राप्त हों, ताकि परीक्षण आंकड़ों की विश्वसनीयता, सटीकता और प्रामाणिकता सुनिश्चित की जा सके। हालांकि उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार दिल्ली में जल आपूर्ति और अपशिष्ट जल की जांच से जुड़ी कुछ प्रयोगशालाओं को अभी एनएबीएल की मान्यता प्राप्त नहीं है। इससे जल गुणवत्ता परीक्षण प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ एवं मानकीकृत बनाने की आवश्यकता स्पष्ट होती है। ऐसे में राजधानी में सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जल परीक्षण अवसंरचना, संस्थागत समन्वय और गुणवत्ता निगरानी तंत्र को मजबूत किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है, ताकि नागरिकों को स्वास्थ्य की दृष्टि से सुरक्षित जल उपलब्ध कराया जा सके। ■

तेल, कानून और लोकतंत्र पर्यावरण की कीमत पर विकास

कुमार सिद्धार्थ
वरिष्ठ पत्रकार

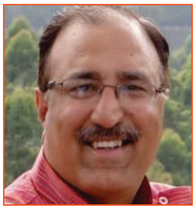

आज की दुनिया ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ी है, जहां जलवायु संकट मानव सभ्यता के भविष्य को तय करने वाला बड़ा प्रश्न बन चुका है। वैज्ञानिक लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि यदि कोयला, तेल और गैस पर हमारी निर्भरता जल्द कम नहीं हुई तो धरती का तापमान ऐसे स्तर तक पहुंच जाएगा, जहां जीवन की वर्तमान संरचनाएं टिक नहीं पाएंगी। इसके बावजूद वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा आज भी जीवाश्म ईंधनों के इर्द-गिर्द घूम रहा है। इस पूरी व्यवस्था की सबसे भयावह बात यह है कि जब कोई सरकार पर्यावरण और जनता के हित में कदम उठाने की कोशिश करती है, तो उसे 'न्याय' के नाम पर दंडित किया जाता है।

पिछले कुछ दशकों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश समझौतों के जरिये एक ऐसा कानूनी ढांचा खड़ा किया गया है, जिसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियां सरकारों पर मुकदमा कर सकती हैं। इसे 'निवेशक राज्य विवाद निपटान प्रणाली' (आईएसडीएस) कहा जाता है। इसके तहत यदि कोई सरकार पर्यावरण, स्वास्थ्य या सामाजिक हित में ऐसा निर्णय लेती है, जिससे किसी कंपनी के मुनाफे पर असर पड़ता है, तो वह कंपनी सरकार से न केवल अपने निवेश की भरपाई, बल्कि 'संभावित भविष्य के मुनाफे' का भी दावा कर सकती है। ये मुकदमे सामान्य अदालतों में नहीं, बल्कि गुप्त ट्रिब्यूनलों में चलते हैं, जहां न पारदर्शिता होती है, न जनता की भागीदारी और न ही लोकतांत्रिक जवाबदेही।

यह व्यवस्था अपने आप में लोकतंत्र के लिए एक गहरा खतरा है। सरकारें जनता द्वारा चुनी जाती हैं, ताकि वे जनता और पर्यावरण के हित में फैसले लें। लेकिन आईएसडीएस जैसे प्रावधानों के कारण वही सरकारें कंपनियों के डर से पीछे हटने लगती हैं। आईएसडीएस की मार सबसे पहले उन देशों पर पड़ी है, जिन्होंने पर्यावरण और जनता के हित में साहसिक फैसले लिए। जर्मनी ने जब परमाणु ऊर्जा से बाहर निकलने का निर्णय किया तो ऊर्जा कंपनी वाटनफॉल ने उस पर अरबों यूरो का दावा ठोक दिया। पाकिस्तान ने एक खनन परियोजना को पर्यावरणीय कारणों से रोका तो उस पर छह अरब डॉलर से अधिक का जुर्माना लगाया गया, जो उसके पूरे शिक्षा और स्वास्थ्य बजट से भी ज्यादा था। स्लोवेनिया में एक ब्रिटिश कंपनी को केवल यह कहने पर कि फ्रैकिंग से पहले पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन जरूरी है, सरकार पर 120 मिलियन यूरो का मुकदमा कर दिया गया और अंततः सरकार को झुकना पड़ा। कोलंबिया में आदिवासी समुदायों के संघर्ष से एक कोयला खदान परियोजना रुकी, लेकिन कंपनियों ने ब्रिटेन-कोलंबिया संधि के तहत सरकार से मुआवजा वसूल लिया।

इन उदाहरणों का सबसे खतरनाक असर

यह है कि सरकारें पर्यावरण बचाने से पहले अब यह सोचने लगती हैं कि कहीं उन्हें अंतरराष्ट्रीय अदालतों में अरबों डॉलर का हर्जाना न भरना पड़ जाए। इसे 'रेगुलेटरी चिल' कहा जाता है, यानी कानून बनाने की हिम्मत तो रहती है, लेकिन उन्हें लागू करने का साहस नहीं बचता। नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिग्लिट्ज ने इस व्यवस्था को 'कानूनी आतंकवाद' कहा है, क्योंकि यह सरकारों को डराकर लोकतांत्रिक फैसलों को पलटने का हथियार बन चुकी है।

लेकिन यह प्रक्रिया केवल कानूनी तंत्र तक सीमित नहीं है। इसका एक और, उससे भी अधिक क्रूर रूप वेनेजुएला में देखने को मिलता है। वेनेजुएला के पास दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार हैं। लंबे समय से यह देश अमेरिकी साम्राज्यवाद और वैश्विक तेल कंपनियों की नजर में खटकता रहा है, क्योंकि उसने अपने तेल संसाधनों पर राष्ट्रीय नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश की। अमेरिका ने वहां की निर्वाचित सरकार को अस्थिर करने के लिए आर्थिक प्रतिबंध लगाए, उसकी अर्थव्यवस्था को पंगु बनाने की कोशिश की और खुले तौर पर सत्ता परिवर्तन की राजनीति चलाई। तेल के लिए एक संप्रभु देश के लोकतंत्र को कुचल देना और अंतरराष्ट्रीय कानूनों की धज्जियां उड़ाना यह दिखाता है कि जब संसाधनों का सवाल आता है, तो लोकतंत्र और मानवाधिकार कितने बौने साबित हो जाते हैं।

अब सवाल यह है कि भारत इस पूरी तस्वीर में कहां खड़ा है? क्या हम खुद को इस खतरे से सुरक्षित मान सकते हैं? शायद नहीं। भारत आज तेजी से वैश्विक पूंजी और निवेश के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। कोयला खनन, तटीय औद्योगिक परियोजनाएं, परमाणु संयंत्र, बड़े बांध, तेल और गैस की खोज ये सभी क्षेत्र पहले से ही पर्यावरण और स्थानीय समुदायों के अधिकारों को लेकर विवादों में घिरे हुए हैं। यदि भविष्य में भारत ऐसे निवेश समझौतों का हिस्सा बनता है, जिनमें ISDS जैसे प्रावधान होंगे, तो हमारी सरकारों पर भी वही दबाव आएगा, जो आज कई अन्य देशों पर है।

भारत में पर्यावरणीय मंजूरी की प्रक्रियाओं को "विकास में बाधा" बताकर कमजोर किया जा रहा है। कई बार परियोजनाओं को तेजी से मंजूरी देने के लिए नियमों में ढील दी जाती है, जनसुनवाई को औपचारिकता बना दिया जाता है और स्थानीय लोगों की आपत्तियों को अनदेखा कर दिया जाता है। यदि इसके ऊपर अंतरराष्ट्रीय मुकदमों का डर भी जुड़ गया, तो पर्यावरण संरक्षण लगभग असंभव हो जाएगा। तब सरकारें जनता और प्रकृति के नहीं, बल्कि निवेशकों और कंपनियों के प्रति जवाबदेह होंगी।

पिछले कुछ दशकों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश समझौतों के जरिये एक ऐसा कानूनी ढांचा खड़ा किया गया है, जिसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियां सरकारों पर मुकदमा कर सकती हैं। इसे 'निवेशक राज्य विवाद निपटान प्रणाली' (आईएसडीएस) कहा जाता है। इसके तहत यदि कोई सरकार पर्यावरण, स्वास्थ्य या सामाजिक हित में ऐसा निर्णय लेती है, जिससे किसी कंपनी के मुनाफे पर असर पड़ता है, तो वह कंपनी सरकार से न केवल अपने निवेश की भरपाई, बल्कि 'संभावित भविष्य के मुनाफे' का भी दावा कर सकती है।

भारत जैसे देश के लिए यह विशेष रूप से खतरनाक है, क्योंकि यहां विकास की कीमत सबसे पहले गरीब, आदिवासी और हाशिए पर पड़े समुदाय चुकाते हैं। जंगलों से विस्थापन, खनन से प्रदूषण, नदियों के सूखने और जमीन के बंजर होने से उनकी आजीविका छिन जाती है। यदि सरकारें अंतरराष्ट्रीय दबाव में आकर पर्यावरणीय फैसलों से पीछे हटने लगेंगी, तो इन समुदायों के अधिकार पूरी तरह कुचल दिए जाएंगे।

वेनेजुएला का उदाहरण और आईएसडीएस जैसी कानूनी व्यवस्थाएं मिलकर यह साफ कर देती हैं कि आज का वैश्विक तंत्र संसाधनों की रक्षा के नाम पर नहीं, बल्कि संसाधनों की लूट को वैध ठहराने के लिए खड़ा किया गया है। एक तरफ कहा जाता है कि दुनिया को जलवायु संकट से बचाना है, दूसरी तरफ उन कंपनियों को कानूनी और राजनीतिक संरक्षण दिया जाता है जिनका अस्तित्व ही इस संकट को गहराने पर टिका है।

भारत को इस पूरे परिदृश्य से गंभीर सबक लेना चाहिए। हमें ऐसे किसी भी अंतरराष्ट्रीय समझौते से सावधान रहना होगा जो हमारी लोकतांत्रिक संप्रभुता और पर्यावरण संरक्षण की क्षमता को कमजोर करता हो। संसद को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह व्यापार और निवेश समझौतों की पूरी तरह समीक्षा करे, उन पर बहस करे और जरूरत पड़ने पर उन्हें अस्वीकार भी कर सके।

भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह संदेश देना चाहिए कि जलवायु कार्रवाई को 'निवेशकों के अधिकार' के नाम पर कुचला नहीं जा सकता। पर्यावरण रक्षा कोई आर्थिक बाधा नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के अस्तित्व का प्रश्न है। यदि सरकारें डर और दबाव में आकर सही फैसले नहीं ले पाएंगी, तो लोकतंत्र केवल एक खोखला ढांचा बनकर रह जाएगा। भारत जैसे देशों के लिए यह समय चेतने का है। विकास का अर्थ केवल जीडीपी बढ़ाना नहीं, बल्कि जीवन, पर्यावरण और लोकतंत्र की रक्षा करना भी है। ■

इंसानियत की रक्षा के लिए जेन Z चले स्वामी विवेकानंद के बताए रास्ते

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
ब्लॉगर एवं शिक्षाविद्

आज की दुनिया में, ज्यादातर देश इंसान बनाने वाली सोच और कार्य के बजाय औपचारिक शिक्षा को ज्यादा अहमियत देते हैं। इसका नतीजा है अराजकता और अव्यवस्था। दौलत कमाने को बुनियादी इंसानी मूल्यों से ज्यादा अहमियत नहीं देनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद, एक दूरदर्शी, ने बहुत पहले ही इस इंसानी बीमारी का कारण पता लगा लिया था और इंसानियत की शांति और मुक्ति के लिए शिक्षा के अपने विचार को फैलाया। विवेकानंद ने शिक्षा पर कोई किताब नहीं लिखी, फिर भी उन्होंने इस विषय पर कीमती बातें बताईं जो आज भी प्रासंगिक और काम की हैं।

स्वामी विवेकानंद, एक सनातनी दार्शनिक, उपदेशक और सुधारक, ने अपना जीवन इंसानियत की भलाई के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने इंसान की बेहतरीन स्थिति पाने के लिए शरीर और आत्मा को बेहतर बनाने पर अपने विचारों की गतिशीलता पर जोर दिया। पूरी दुनिया के लिए उनके प्रेरणादायक भाषणों का मुख्य विषय इंसान के विकास, प्रगति और संतुष्टि के बारे में था। शरीर, मन और आत्मा में पूर्णता पाने के लिए काम करते रहें। उनके सभी व्यवहार और उपदेशों में यह बात प्रमुख थी।

शिक्षा कैसी होनी चाहिए : उनका पुरजोर आह्वान था– 'हमें जीवन बनाने वाली, इंसान बनाने वाली, चरित्र बनाने वाली शिक्षा चाहिए।' ऐसे विचारों को अपनाना चाहिए। हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जो चरित्र का विकास करे। जिससे मन की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विस्तार होता है, और यह इंसान को 'अपने पैरों पर खड़ा' होने में मदद करता है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं– 'सभी शिक्षा और प्रशिक्षण का मकसद इंसान बनाना होना चाहिए। लेकिन, इसके बजाय, हम लगातार बाहरी चीजों को चमकाने की कोशिश कर रहे हैं। जब अंदर कुछ नहीं है, तो बाहर चमकाने का क्या फायदा। स्वामी जी की शिक्षा अंदर से आती है और इसे ठीक से दिखाने में मदद करती है। यह सब क्या है? यह शिक्षा इंसान के अंदर और बाहर से ऑर्गेनिक विकास को सुनिश्चित करती है। न कि बाहर से अंदर की ओर बदलाव करने की कोशिश के तौर पर जो, ज्यादातर मामलों में, अंदर के इंसान को उदासी और कमजोर मन के कमरे में बंद कर देती है।

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए कई तरह के तरीके सुझाए, जिसमें शिक्षा लोगों को सशक्त बनाने का मुख्य साधन थी। उन्होंने एक बार कहा था – क्या शिक्षा उस नाम के लायक है अगर वह आम लोगों को जीवन के संघर्ष के लिए खुद को तैयार करने में मदद नहीं करती, चरित्र की

ताकत, दान की भावना और शेर जैसा साहस पैदा नहीं करती? 'सच्ची शिक्षा वह है जो किसी को अपने पैरों पर खड़ा होने देती है।' उन्होंने शिक्षा को धर्म शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जो छात्रों के चरित्र को आकार देती है और उनमें मानवीय आदर्शों को स्थापित करती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा, 'खुद को सिखाओ, हर किसी को उसकी सच्ची प्रकृति सिखाओ, सोई हुई आत्मा को जगाओ, और देखो कि वह कैसे जागती है। जब यह सोई हुई आत्मा आत्म-जागरूक गतिविधि के लिए जागृत होती है, तो शक्ति, महिमा, दया, पवित्रता और सब कुछ महान प्रकट होगा।' स्वामी विवेकानंद, भारत में एक प्रमुख राष्ट्रवादी, ने धर्म की जीवन शक्ति को फिर से जीवंत करने का लक्ष्य रखा जो एक राष्ट्र को आकार देने में मदद करता है। उनका मानना था कि धर्म केंद्र बनाता है, जों भारत के राष्ट्रीयता का केंद्रीय विषय है। वह हिंदू पुनर्जागरण का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका जन्म भारत के इतिहास के एक महत्वपूर्ण क्षण में हुआ था, जब सभी उच्च्व आवेग भौतिकवाद की आने वाली लहर से अभिभूत हो गए थे। शिक्षित लोग विदेशी परंपराओं को अपना रहे थे क्योंकि उनका मानना था कि भारत की समस्याओं और प्रगति के लिए पश्चिमी समाधान और तरीकों और संस्थानों को स्वीकार करना ही वास्तविक है। विवेकानंद ने इस प्रवाह को रोकने की कोशिश की, और अपने देशवासियों के सामने वेदांत का सुंदर और उत्साहवर्धक संदेश रखा, जिसने पूर्व की आध्यात्मिकता को सामाजिक सेवा के दृष्टिकोण और पश्चिम की संगठनात्मक क्षमता के साथ मिलाया। यही उनके नव-वेदांतवाद के दर्शन का अर्थ है और जिसका उन्होंने उपयोग किया। पूर्व और पश्चिम की सभ्यताओं का संश्लेषण करने के लिए, और इसलिए मानवता की सच्ची मुक्ति का पता लगाने के लिए।

युवाओ सें स्वामीजी की उम्मीद : मुझे अपने देश पर, खासकर इसके युवाओं पर भरोसा है। मेरी उम्मीद आप लोगों से है। अपने खून में बहुत ज्यादा भावना और जोश के साथ, आप इस धरती के एक कोने से दूसरे कोने

तक मार्च करेंगे, और हमारे पूर्वजों की अमर आध्यात्मिक शिक्षाओं का प्रचार करेंगे और सिखाएंगे। और यही वह बड़ा काम है जो

> **स्वामी विवेकानंद, एक सनातनी दार्शनिक, उपदेशक और सुधारक, ने अपना जीवन इंसानियत की भलाई के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने इंसान की बेहतरीन स्थिति पाने के लिए शरीर और आत्मा को बेहतर बनाने पर अपने विचारों की गतिशीलता पर जोर दिया। पूरी दुनिया के लिए उनके प्रेरणादायक भाषणों का मुख्य विषय इंसान के विकास, प्रगति और संतुष्टि के बारे में था। शरीर, मन और आत्मा में पूर्णता पाने के लिए काम करते रहें। उनके सभी व्यवहार और उपदेशों में यह बात प्रमुख थी।**

आपका इंतजार कर रहा है। अगर आप मुझ पर विश्वास करने की हिम्मत करते हैं, तो आप सभी का भविष्य बहुत अच्छा होगा। खुद पर बहुत ज्यादा विश्वास रखें, जैसा विश्वास मुझे बचपन में था और जिस पर मैं अब काम कर रहा हूं। खुद पर विश्वास रखें - कि वह शाश्वत शक्ति हर आत्मा में बसी है - और आप पूरे भारत को फिर से जीवंत कर देंगे। हां, हम सूरज के नीचे हर देश की यात्रा करेंगे, और हमारे विचार जल्द ही दुनिया के हर देश को बनाने वाली विभिन्न शक्तियों का एक हिस्सा बन जाएंगे। हमें भारत और उसके बाहर सभी जातियों के जीवन में घुलना-मिलना होगा; इसके लिए प्रयास करना होगा। हमें आगे बढ़ना होगा और अपनी आध्यात्मिकता और विचारों से दुनिया को जीतना होगा। कोई दूसरा विकल्प नहीं है; हमें यह करना ही होगा या खत्म हो जाना होगा। जागृत और जीवंत राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए सबसे जरूरी चीज है भारतीय विचारों का दुनिया पर विजय।

स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था, 'आप जो सोचते हैं, वही बन जाते हैं। अगर आप खुद को कमजोर सोचते हैं, तो आप कमजोर होंगे; अगर आप खुद को मजबूत सोचते हैं, तो आप मजबूत होंगे।' उन्होंने यह भी कहा- 'सबसे ऊंचे लक्ष्य की ओर देखो, उस सबसे ऊंचे का लक्ष्य रखो, और तुम सबसे ऊंचे लक्ष तक पहुंच जाओगे।' उनका संदेश सरल लेकिन मजबूत था। विवेकानंद ने अपने विचार सीधे लोगों से, खासकर युवाओं से कहे। उनके भाषण ने जाति और धर्म की बाधाओं को तोड़ दिया, और वैश्विक भाईचारे की भाषा में बात की। उन्होंने जो कहा, वह आज हमारे समाज के बच्चों के लिए उनके विचारों और आदर्शों के महत्व को दिखाता है। ■

देश की समृद्ध जीवंत संस्कृतिक उत्सवों का फरवरी

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

प्रकृति की अनोखी छटा बसंत आगमन से शुरु होती है। पूर्वोत्तर भारत में फरवरी तो पर्यटन का सीजन है। माघ मेला तो प्रयागराज में चल ही रहा है। तीर्थस्थल हमारी आस्था के केन्द्र हैं। यहां जाकर मानसिक संतोष मिलता है। देश के कोने कोने से तीर्थयात्री माघ मेला में आते हैं। सभी तीर्थ भी अपने राजा से मिलने प्रयागराज, माघ में आते हैं। इसलिए श्रद्धालु भी पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक यहां रहना, अपना सौभाग्य मानते हैं। एक ही स्थान पर समय बिताते हुए प्रदोष, माघी पूर्णिमा, गुरु रविदास जयंती, जानकी जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती, दयानंद सरस्वती जयंती मिलजुल कर मनाते हैं।

वृंदावन बांके बिहारी मंदिर, शाह बिहारी मंदिर, मथुरा के श्री कृष्ण जन्मस्थान और बरसाना के राधा जी मंदिर में ठाकुर जी को बसंत पंचमी के दिन पीली पोशाक पहनाई जाती है और पहला अबीर गुलाल लगा कर होलिका दहन के लिए ढाड़ा गाड़ा जाता है और बसंत पंचमी से फाग गाने की शुरुआत होती है। देश विदेश से श्रद्धालु ब्रजमंडल की होली में शामिल होने के लिए तैयारी शुरु कर देते हैं। बसंत पंचमी से ब्रज में चलने वाले 40 दिन का उत्सव चल रहा है। खिचड़ी मेला गुरु गोरखनाथ जी के मंदिर गोरखपुर (जिले का नाम गुरु गोरखनाथ के नाम पर है) में मकर संक्राति से शुरू है जो एक महीने से अधिक समय फरवरी तक चलता है। किसान अपनी पहली फसल की खिचड़ी चढ़ाने के लिए लाइनों में लगे होते हैं। इस प्रसाद की खिचड़ी को मंदिर की ओर से बनाया जाता है और विशाल मेले के साथ, मंदिर में खिचड़ी का भंडारा चलता है। रविवार और मंगलवार के दिन खास महत्व होता है। मेले में झूले और हर तरह के सामान, खाने पीने की दुकाने लगी रहती हैं। गुरु गोरखनाथ के खिचड़ी मेले में कोई भूखा नहीं रह सकता। खिचड़ी का प्रसाद खाओ और मेले का आनन्द उठाओ। देश के बड़े आयोजनों में यह मेला है।

बूरी बूट युलो बसंत के स्वागत में अरुणाचल प्रदेश की न्याशी जनजाति जो राज्य की प्रमुख स्वदेशी जनजातियों में से एक है, उसके द्वारा यह जीवंत आनंदमय उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव बसंत आगमन के स्वागत में, अपने पूर्वजों की आत्माओं के सम्मान करने, भरपूर्व फसल के लिए आशीर्वाद मांगने और अपनी सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने के लिए उत्सव बसंत से शुरु होकर कई दिन तक चलता है।

जैसलमेर मरु उत्सव 30 जनवरी से 1 फरवरी यह राजस्थान के सबसे लोकप्रिय त्यौहारों में से एक है जो जैसलमेर से 42 किमी दूर थार रेगिस्तान की चमकदार रेत पर मनाया जाता है। दुनियाभर से पर्यटक यहां रण उत्सव के जीवंत और रंगीन माहौल को अनुभव करने आते हैं।

केरल में अदूर के प्राचीन श्री पार्थसारथी मंदिर में फरवरी को आयोजित दस दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समापन है। जिसमें हाथियों के प्रर्दशन का नजारा प्रमुख है।

उदयपुर विश्व संगीत महोत्सव फरवरी को राजस्थान के उदयपुर में तीन खूबसूरत जगहों पर दिन के अलग अलग मूड को ध्यान में रखकर संगीत का प्रदर्शन होगा।

माघ पूर्णिमा को काशी में जन्में संत रविदास जयंती (1 फरवरी) पवित्र नदी में स्नान करके उनके रचे पदों दोहों को कीर्तन में गाया जाता है। उनका जीवन बताता है कि भक्ति के साथ सामाजिक, परिवारिक कर्त्तव्यों को भी निभाना चाहिए। उनका कहना था कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'

ब्राह्मण मत पूजिए जो होवे गुणहीन
पूजिए चरण चंडाल के, जो होवे गुण प्रवीण

सूरजकुंड अन्तर्राष्ट्रीय शिल्प मेला 1 से 16 फरवरी में भारत के शिल्प और स्थानीय कलाओं का आनन्द उठाने के लिए लाखों लोग फरीदाबाद पहुंचते हैं। ओपन एयर थियेटर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखना और स्थानीय व्यंजनों का आनन्द उठाना सबको बहुत भाता है।

कश्मीर में शिवरात्रि 15 फरवरी का उत्सव तीन चार दिन पहले से और दो दिन बाद तक मनाया जाता है। नेपाल का पशुपतिनाथ मंदिर यह ऐसा स्थान है। जिसके विषय में यह माना जाता है कि यहां आज भी शिव की मौजूदगी है। पशुपतिनाथ को उनके भक्त भोलेनाथ, महादेव, रुद्र, पंचमुखी, प्रभु पशुपतिनाथ कहते हैं। यहां भी कई अनोखी

बातें और परंपराएं जुड़ी हैं। भालेश्वर महादेवी काठमांडू की चंद्रगिरि पहाड़ियों पर स्थित हिन्दू मंदिर है। यह भगवान शिव को समर्पित है। गलेश्वर मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था के कारण, मुख्यमंदिर को दूसरे पशुपति के नाम से भी जाना जाता है।

दक्षिण भारत आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना के सभी शिव मंदिरों में श्रद्धालुओं की लाइने लगी रहती हैं। उज्जैन में महाकालेश्वर और जबलपुर तिलवाड़ा में जाना अपना सौभाग्य समझा जाता है। भगवान शिव की जटाओं से उनकी पुत्री माँ नर्मदा की उत्पत्ति हुई है। अमरकंटक में घूमते हुए माँ की कहीं भी जलधारा मिल जातीं थीं इसीलिये कहते हैं 'नर्मदा के कंकर सब शिवशंकर'।

बांग्लादेश के चंद्रनाथ धाम जो चिटगांव के नाम से प्रसिद्ध है। वहां कहते हैं इस दिन अभिषेक करने से सुयोग्य पति पत्नी मिलते हैं। नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में देश दुनिया से श्रद्धालु पहुंचते हैं।

'शिवरात्रि' का अर्थ है भगवान शिव की महान रात्रि सभी हमारे हिन्दू उत्सव दिन में मनाये जाते हैं। पर इस पर्व में रात्रि के चारों पहर अभिषेक होता है। एक साधारण इंसान शिव के 28 अवतार, शिवपुराण नहीं जानता, उसे बस ये पता है कि भोलेनाथ बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए जैसा सुनता देखता है, वही उसकी पूजा की विधि बन जाती है। जिसे वह श्रद्धा से करता है और श्रद्धा से बुद्धि को बल मिलता है। तुलसीदास ने भी लिखा है- **शिवद्रोही मम दास कहावा सो नर सपनेहु मोहि नहिं पावा।**

नृत्य महोत्सव नाट्यांजलि यह तमिलनाडु के कई नटराज मंदिरों के प्रांगण में एक सप्ताह तक मनाया जाने वाला त्यौहार है। सबसे सुंदर आयोजन मंदिरों के शहर चिदाबंरम में होता है।

नागौर महोत्सव (15 से 18) के अंत में यह भव्य पशु मेला के कारण भी राजस्थान के ससे जीवंत त्योहारों में है। चार दिन राजस्थानी संगीत, लोक नृत्य और स्थानीय व्यंजनों का आनन्द लिया जाता है। तरह तरह की प्रतियोगिताएं आयोजित की जातीं हैं। हस्तशिल्प और आभूषणों की जमकर खरीदारी होती है। तीन महीने का रन उत्सव तो चल ही रहा है।

महानंदा नवमीं को उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में महानंदा नवमी मनाई जाती है। हरसू ब्रह्मदेव जयंती (16 फरवरी) भी मनाई जायेगी।

परियानमपेट्टा पूरम 17 फरवरी को केरल पलक्कड़ जिले में परियानमपट्टा मंदिर स्थित है। यहां वार्षिक पूरम उत्सव मलयालम महीने कुंभम में मनाया जाता है। इसमें तीन जुलूस आयोजित किये जाते हैं जिसमें सजे हाथी भाग लेते हैं।

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिप्रदा से शुरू होने वाली विश्व प्रसिद्ध 84 कोसी (252 किमी) नैमिशारण्य परिक्रमा चक्रतीर्थ या गोमती नदी में स्नान करके, गजानन को लडडू का भोग लगा कर यात्रा शुरु करते हैं। रोज आठ कोस पैदल चलते हैं। 15 दिन तक ये यात्रा चलती है। महर्षि दधीचि ने अपनी अस्थियां दान देने से पहले तीर्थो का दर्शन करने की इच्छा प्रकट की थी। इंद्र ने सभी तीर्थों को नैमिशारण्य में 5 कोस की परिधी में आमंत्रित कर स्थापित किया। महर्षि दधीचि ने सबके दर्शन करके शरीर का त्याग किया था। दूर दूर से श्रद्धालु परिक्रमा करने आते हैं। यात्रा में लोगों का प्यार और सहयोग बहुत मिलता है। भंडारा, चाय और पीने के पानी की व्यवस्था रहती है। रामचरितमानस में भी लिखा है

भारत में फरवरी तो पर्यटन का सीजन है। माघ मेला तो प्रयागराज में चल ही रहा है। तीर्थस्थल हमारी आस्था के केन्द्र हैं। यहां जाकर मानसिक संतोष मिलता है। देश के कोने कोने से तीर्थयात्री माघ मेला में आते हैं। सभी तीर्थ भी अपने राजा से मिलने प्रयागराज, माघ में आते हैं। इसलिए श्रद्धालु भी पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक यहां रहना, अपना सौभाग्य मानते हैं।

तीरथ वर नैमिश विख्याता,
अति पुनीत साधक सिद्धि दाता।

कृष्ण भगवान अति व्यस्त होने के कारण कई दिनों तक वे राधा जी से मिलने नहीं पहुंचे तो राधा जी बहुत उदास हो गईं। जिसका असर प्रकृति पर भी पड़ने लगा। हरियाली मुरझाने लगी। यह देख कृष्ण राधा से मिलने पहुंच गए। उन्हें देख राधा जी बहुत खुश हुई और गोपियां भी चहकने लगीं और प्रकृति भी खिल उठी। कृष्ण ने राधा को छेड़ते हुए एक फूल तोड़ कर मारा। बदले में राधा जी ने भी फूल मारा। अब दोनों ओर से फूल एक दूसरे को मारे जाने लगे। इस खेल में ग्वाल गोपियां भी फूल खेलों प्रतियोगिता में शामिल हो गए। उस दिन फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीय तिथि थी। तब से इस दिन को फुलैरा दूज (19 फरवरी) के रूप में मनाया जाता है। मंदिरों को फूलों से सजाते हैं। इस दिन बिना मुहूर्त के शुभ काम किए जाते हैं। इसी दिन श्रीरामकृष्ण की 190वीं जयंती बेलूर मठ में मनाई जायेगी।

51वें खजुराहों नृत्य महोत्सव 20 से 26 फरवरी को मध्य प्रदेश कला परिषद् द्वारा आयोजित नृत्य उत्सव में दुनियाभर से पर्यटक पहुंचते हैं।

हर नदी वहां के स्थानीय लोगों के लिये पवित्र है और उनकी संस्कृति और उत्सवों से अभिन्न रूप से जुड़ी है। नदियों को मां कहा जाता है। जैसे मां निस्वार्थ संतान का पोषण करती है। वैसे ही नदी हमें देती ही देती है। जीवनदायनी नदियों को लोग पूजते हैं, मन्नत मानते हैं। वनवास के समय सीता जी ने भी गंगा मैया पार करने से पहले, उनसे सकुशल वापिस लौटने की प्रार्थना की थी। इसलिए जानकी जयंती (26 फरवरी) पर श्रद्धालु पवित्र नदी का पूजन भी करते हैं। यही हमारे उत्सवों की मिठास है जिसमें प्रकृति भी हमारे साथ है। ■

सर्दियों के मौसम में होने वाली बीमारियां एवं उनसे बचाव

डॉ. संजय तेवतिया
चिकित्सक

भारत में सर्दियों का मौसम अपने साथ ठंड, कोहरा और शुष्कता लेकर आता है। यह मौसम जहां एक ओर सुखद लगता है, वहीं दूसरी ओर कई प्रकार की बीमारियों को भी जन्म देता है। तापमान में गिरावट, कम धूप और रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी के कारण लोग जल्दी बीमार पड़ जाते हैं। विशेष रूप से बच्चे, बुजुर्ग और पहले से बीमार व्यक्ति सर्दियों में अधिक प्रभावित होते हैं। अतः आवश्यक है कि हम सर्दियों में होने वाली सामान्य बीमारियों को समझें और उनसे बचाव के उपाय अपनायें। सर्दियों में सबसे आम बीमारी सर्दी - जुकाम है।

ठंडी हवा, वायरस संक्रमण और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली इसके प्रमुख कारण हैं। इसके लक्षणों में नाक बहना, छींक आना, गले में खराश और सिरदर्द शामिल हैं। इससे बचाव के लिए गर्म कपड़े पहने और शरीर को ठंड से बचायें, गुनगुना पानी पीयें, तुलसी, अदरख और शहद का सेवन करें, भीड़-भाड़ वाली जगहों से बचें। फ्लू एक वायरल संक्रमण है, जो सर्दियों में तेजी से फैलता है। इसके लक्षणों में तेज बुखार, बदन दर्द, थकान और खांसी शामिल है। इसके बचाव के लिए हाथों को नियमित रूप से साबुन से धोएं, फ्लू का टीकाकरण करायें, पर्याप्त नींद लें, संतुलित आहार का सेवन करें। गले का संक्रमण ठंडे पेय पदार्थों और ठंडी हवा के संपर्क में आने से गले में संक्रमण हो सकता है। इससे आवाज बैठना, दर्द और सूजन हो सकती है, इससे बचाव के लिए ठंडी चीजों से परहेज करें, नमक मिलें गुनगुने पानी से गरारें करें। सर्दियों में त्वचा रूखी और बेजान हो जाती है। खुजली, फटना और एलर्जी जैसी समस्याएं आम हैं,

इनसे बचाव के लिए नियमित रूप से मोस्वराईजर का प्रयोग करें, अधिक गर्म पानी से स्नान न करें, पर्याप्त पानी पीयें। ठंडी हवा और प्रदूषण के कारण अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और अन्य श्वसन रोग बढ़ जाते हैं। इनसे बचाव के लिए ठंडी हवा से बचने के लिए मुंह और नाक ढकें, नियमित दवाइयां लेते रहें, प्रदूषित स्थानों से दूरी बनायें रखें। सर्दियों में गठिया और जोड़ों के दर्द की समस्या बढ़ जाती है।

ठंड के कारण रक्त संचार धीमा हो जाता है। इससे बचाव के लिए हल्का व्यायाम करें, जोड़ों को गर्म रखें, गुनगुने पानी से सेंक करें। सर्दियों में कम पानी पीने और कम शारीरिक गतिविधि के कारण कब्ज और अपच जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इनसे बचाव के लिए फाइबर युक्त भोजन करें, पर्याप्त पानी पीऐं, नियमित दिनचर्या अपनाएं। कम धूप और ठंड के कारण कुछ लोगों में उदासी, आलस्य और अवसाद की समस्या देखी जाती है, इससे बचाव के लिए धूप में समय बीताएं, योग और ध्यान करें, सकारात्मक सोच बनाएं रखें। सर्दियों में स्वास्थ्य को सामान्य बनाये रखने के लिए पौष्टिक भोजन जैसे फल, सब्जियां, सूखे मेवें लें, नियमित व्यायाम करें, शरीर को ढ़क कर रखें, स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। सर्दियों का मौसम यदि सावधानी से न बिताया जाए तो यह अनेक बीमारियों को जन्म दे सकता है। हालंकि थोड़ी सी सतर्कता, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और स्वच्छ जीवन शैली अपना कर हम इन बीमारियों से आसानी से बच सकतें हैं। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है, इसलिए सर्दियों में अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। ■

कविता

सतीश कुमार
अध्यक्ष, कर्मयोग इंटरनेशनल

समय की पुकार है,
रण भूमि भी तैयार है!
नैरेटिव की जंग है
झूठ के प्रहार है
है निशाने पर ये भारत
अब होनी आर पार है
विचार ही यहां शस्त्र है
तलवार का ये युद्ध नहीं
कलम का ही वार है
कमर कसो दृढ़ बनो
ललकार दो, आगे बढ़ो
झूठ के अंधेरों में
सत्य की ज्वाला जलाओ
धर्म और अधर्म के
इस नए महाभारत में
जो तुम सैनिक बनना चाहो
कलम उठाओ , कलम उठाओ
कलम उठाओ ।
देश के इतिहास के
साथ छल हो रहा
पूर्वजों के मान पर
संस्कृति की शान पर
दुष्प्रचार की सेना यह
आज हमला बोल रही
मां भारती के वे सुपुत्र
है जो प्रहरी राष्ट्र के
वे अकेले से पड़े है
आस्था भी डोल रही
परिस्थिति विकट यहां
अस्मिता का संकट यहां
सभी के सर क्यों झुके हैं
तुम तो अपना सिर उठाओ।
कलम उठाओ कलम उठाओ
कलम उठाओ।
वामी, कामी, चरम पंथी
रोम के अधर्मदूत
तेल की पूंजी से पोषित
युद्ध में सब साथ हैं
पूरे इस भूमंडल में
हम अकेले ही खड़े हैं
आज हम क्यों ना लड़ेंगे
हम हजारों वर्ष लड़े हैं
मानो नियति ने हमें ही
दायित्व ये सौंपा हुआ है
इस पूरी वसुंधरा को
एक कुटुंब का पाठ पढ़ाओ
कमर कसो, बाहर आओ
कलम उठाओ, कलम उठाओ
कलम उठाओ।
जो मेधा पश्चिम गई ,
वह वहां की हो गई ।
सुविधा मिली, डॉलर मिला
दृष्टि दोष से घिरे
कलम उनकी बिक गई।
कुछ अपने ही देश में
विदेशी बन के रह रहे
भोग भारत की सुविधा
भारत ही को डस रहे
मां भारती के ये कुपुत्र
अपनी ही मां को नोचते
शत्रु धन प्रभाव में
मां में ही दोष ढूंढते
मैकाले मानस पुत्र ये
भारत भंजक हो गए
शत्रु दल के साथ मिल
राष्ट्र द्रोही हो गए
न शत्रु बोध, न स्व बोध
न काल बोध, न धर्म बोध
शत्रु दल की ढाल बन
ये परम शत्रु हो गए
औरों का हिसाब बाद में
पहले इन्हें ही सबक सिखाओ
कैंपस से, किताब से
और नीति निर्माण से
टीवी की चर्चाओं से
घर में बहती हवाओं से
निष्प्रभाव इन्हें करो
बाहर का रास्ता दिखाओ
कलम उठाओ कलम उठाओ
कलम उठाओ।
ध्यान तप, चिंतन मनन से
अध्ययन और स्वाध्याय से
अपने मन प्राण से
तथ्य से , प्रमाण से
तर्क से , अनुसंधान से
दर्शन से , विज्ञान से
साहित्य और कलाओं से
ज्ञान यज्ञ ऐसा रचाओ
भ्रम के इस लाक्षागृह को
हे राघव के वंशजों
तुम दशानन सा जलाओ
कलम उठाओ, कलम उठाओ
कलम उठाओ।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व का बढ़ता प्रभाव संस्कृति से लेकर वैश्विक अर्थव्यवस्था तक

हिंदुत्व को लंबे समय तक केवल भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान के रूप में देखा गया, लेकिन आज हिंदुत्व अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक ऐसी अवधारणा के रूप में उभर रहा है, जो संस्कृति, जीवनशैली, मूल्यों और आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से दुनिया के अनेक देशों में अपनी जगह बना रहा है।

हिन्दू संस्कृति का सबसे सशक्त उदाहरण दीवाली है, जो अब केवल भारत तक सीमित पर्व नहीं रह गया है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों में दीवाली सार्वजनिक रूप से मनाई जाती है। कई देशों में सरकारी भवनों को रोशन किया जाता है और शहरों के प्रमुख स्थलों पर दीवाली कार्यक्रम आयोजित होते हैं। यह सांस्कृतिक पहचान अब आर्थिक स्वरूप भी ले चुकी है। दीवाली के समय भारतीय कपड़ों, सजावटी वस्तुओं, दीयों, मिठाइयों, गिफ्ट और आभूषणों की मांग अंतरराष्ट्रीय बाजारों में तेजी से बढ़ती है। इससे भारतीय व्यापारियों, निर्यातकों और छोटे उद्योगों को बड़ा लाभ मिलता है। कई देशों में दीवाली अब रिटेल और इवेंट इंडस्ट्री के लिए एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक अवसर बन चुकी है।

इसी तरह योग और ध्यान, जो सनातन परंपरा का अभिन्न हिस्सा हैं, आज वैश्विक जीवनशैली का हिस्सा बन चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से दुनिया भर में योग को औपचारिक पहचान मिली है। पश्चिमी देशों में योग स्टूडियो, वेलनेस सेंटर, ऑनलाइन योग प्लेटफॉर्म और प्रशिक्षक नेटवर्क तेजी से बढ़े हैं। यह केवल स्वास्थ्य से जुड़ा विषय नहीं रहा, बल्कि एक विशाल वैश्विक वेलनेस अर्थव्यवस्था का रूप ले चुका है। भारतीय योग प्रशिक्षकों, संस्थानों और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की इसमें बड़ी भूमिका है, जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत आर्थिक शक्ति में बदल रही है।

विदेशों में बने हिन्दू मंदिर और सांस्कृतिक केंद्र भी हिंदुत्व के अंतरराष्ट्रीय विस्तार का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व में बने यह मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक संवाद और सामुदायिक गतिविधियों के केंद्र बन चुके हैं। इन स्थानों पर होने वाले धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों से स्थानीय पर्यटन, होटल उद्योग, परिवहन और छोटे व्यवसायों को भी लाभ मिलता है। इस तरह हिंदू परंपराएं स्थानीय अर्थव्यवस्था से जुड़कर सकारात्मक आर्थिक प्रभाव उत्पन्न कर रही हैं।

हिंदुत्व का एक और महत्वपूर्ण वैश्विक पहलू आयुर्वेद और भारतीय जीवन दर्शन है। प्राकृतिक चिकित्सा, हर्बल उत्पाद, पंचकर्म और आयुर्वेदिक जीवनशैली को दुनिया के कई देशों में अपनाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय हर्बल उत्पादों और आयुर्वेदिक दवाओं की मांग लगातार बढ़ रही है। इससे भारत के निर्यात क्षेत्र को मजबूती मिली है और पारंपरिक ज्ञान आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन रहा है।

दुनिया भर में बसे प्रवासी भारतीय समुदाय भी इस विस्तार में अहम भूमिका निभा रहे हैं। वे मंदिरों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और त्योहारों के माध्यम से अपनी पहचान बनाए रखते हैं और साथ ही व्यापार, निवेश, स्टार्टअप और शिक्षा के जरिए भारत से आर्थिक संबंध भी मजबूत करते हैं। यह प्रवासी नेटवर्क हिंदुत्व को एक सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ वैश्विक आर्थिक नेटवर्क से भी जोड़ देता है।

इन सभी पहलुओं को देखें तो स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व का विकास किसी एक दिशा में नहीं हुआ है। यह संस्कृति, अध्यात्म, जीवनशैली और अर्थव्यवस्था के आपसी मेल से आगे बढ़ा है। दीवाली की वैश्विक आर्थिक पहचान, योग और आयुर्वेद की अंतरराष्ट्रीय इंडस्ट्री, मंदिरों से जुड़ा सांस्कृतिक पर्यटन और प्रवासी भारतीयों की आर्थिक भागीदारी यह सभी दर्शाते हैं कि हिंदुत्व आज विश्व मंच पर एक सकारात्मक, प्रभावशाली और बहुआयामी शक्ति के रूप में उभर रहा है।

आने वाले समय में यह प्रभाव और गहराएगा, क्योंकि दुनिया भारतीय परंपराओं को केवल सांस्कृतिक जिज्ञासा के रूप में नहीं, बल्कि संतुलित जीवन और टिकाऊ विकास के मॉडल के रूप में देखने लगी है। ■

झोला वुमन : एक शांत विचार से जन्मी जनआदत

समाज में वास्तविक परिवर्तन अक्सर बड़े नारों या आक्रामक आंदोलनों से नहीं, बल्कि छोटे, सरल और निरंतर प्रयासों से आता है। डॉ. अनुभा पुंडीर की यात्रा इसी सत्य को साकार करती है। वे अपने जमीनी स्तर के कार्यों के लिए "झोला वुमन" के नाम से जानी जाती हैं। कपड़े के झोले को एक पर्यावरण अनुकूल विकल्प के रूप में स्थापित करने का उनका प्रयास आज एक विचार से आगे बढ़कर जन-आदत बनने की दिशा में अग्रसर है

डॉ. अनुभा पुंडीर ने एक ऐसे समय में प्लास्टिक के विकल्प के रूप में झोले का संदेश दिया, जब सुविधा और उपभोग को आधुनिकता का प्रतीक माना जा रहा था। उन्होंने जन-जागरूकता अभियानों, सामुदायिक संवाद और स्वदेशी उत्पादन के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सतत जीवन-शैली केवल नीतियों या कानूनों से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की आदतों से आकार लेती है। उनका विश्वास है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति घर से निकलते समय एक पुनः उपयोग योग्य झोला साथ रखे, तो यह छोटा-सा कदम एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले सकता है।

उनकी पहल की विशेषता यह है कि यह पर्यावरण संरक्षण को भारतीय सांस्कृतिक चेतना से जोड़ती है। झोला उनके लिए केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-मूल्यों, सादगी, स्वावलंबन और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक है। इसी दृष्टिकोण के साथ उन्होंने झोला अभियान को 'स्वदेशी' विचार से जोड़ा, जहां स्थानीय कारीगरों, महिला स्व-सहायता समूहों और ग्रामीण उत्पादकों को कपड़े के झोले के निर्माण से जोड़ा गया। इस प्रकार उनका कार्य पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आजीविका सृजन का माध्यम भी बना।

एक शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में डॉ. पुंडीर यह भली-भांति समझती हैं कि व्यवहार परिवर्तन एक धीमी लेकिन स्थायी प्रक्रिया है। उन्होंने किसी तात्कालिक परिणाम की अपेक्षा किए बिना वर्षों तक वही सरल संदेश दोहराया - प्लास्टिक छोड़िए, झोला अपनाइए। इस निरंतरता ने धीरे-धीरे लोगों की सोच और आदतों में स्थान बनाया। आज अनेक लोग बिना किसी दबाव या प्रचार के कपड़े के झोले को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना रहे हैं।

डॉ. अनुभा पुंडीर का कार्य यह भी दर्शाता है कि

पर्यावरणीय जिम्मेदारी केवल प्रकृति की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक संतुलन से भी जुड़ी हुई है। महिलाओं और स्थानीय समुदायों को इस अभियान से जोड़कर उन्होंने यह सिद्ध किया कि सतत विकास तभी संभव है, जब पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण साथ-साथ चलें।

उनकी यात्रा यह सिखाती है कि सच्चा परिवर्तन दिखावे से नहीं, बल्कि निरंतर कर्म और नैतिक स्पष्टता से आता है। बिना किसी शोर-शराबे के, बिना आत्मप्रचार के, उन्होंने एक साधारण झोले को विचार, संस्कार और व्यवहार का प्रतीक बना दिया। आज "झोला आंदोलन" केवल प्लास्टिक के विकल्प की बात नहीं करता, बल्कि एक ऐसी जीवन-शैली का आग्रह करता है जो भारतीय परंपरा में निहित है और भविष्य के लिए आवश्यक भी।

डॉ. अनुभा पुंडीर का संदेश सरल और प्रेरक है। पर्यावरण संरक्षण कोई अस्थायी अभियान नहीं, बल्कि एक दैनिक अभ्यास है और इस अभ्यास की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से होती है। हर बार घर से निकलते समय एक झोला साथ रखने के संकल्प से।

CCSU मेरठ में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की बड़ी पहल

महिलाओं को रोजगार से जोड़ने की दिशा में मेरठ स्थित चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय यानि की CCSU ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। जी हां विश्वविद्यालय में देश का पहला सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्पोर्ट्स गुड्स मैन्युफैक्चरिंग यूनिट शुरू किया गया जो महिलाओं के लिए और महिलाओं द्वारा संचालित है, जहां छात्राएं बैडमिंटन रैकेट बनाने का व्यावहारिक प्रशिक्षण ले रही हैं।

रोजाना बन रहे 200 से अधिक बैडमिंटन रैकेट : इस कौशल केंद्र में फिलहाल 20 छात्राओं का प्रशिक्षण चल रहा है। प्रशिक्षण के दौरान छात्राएं प्रतिदिन 200 से ज्यादा बैडमिंटन रैकेट तैयार कर रही हैं। प्रशिक्षण पूरा करने वाली छात्राओं को सीधे उत्पादन कार्य में शामिल किया जा रहा है।

स्वरोजगार के लिए भी मिलेगी पूरी मदद : प्रोजेक्ट इंचार्ज प्रशांत गुप्ता ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा 20-20 छात्राओं के बैच बनाकर प्रवेश दिया जा रहा है। यदि कोई छात्रा प्रशिक्षण के बाद अपना स्वयं का काम शुरू करना चाहती है, तो उसे मशीनरी, तकनीक और मार्गदर्शन से जुड़ी हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

बता दें विश्वविद्यालय के छात्र ही नहीं, बल्कि आम नागरिक भी इस केंद्र से बैडमिंटन रैकेट खरीद सकते हैं, जिससे छात्राओं के बनाए उत्पादों को बाजार मिल रहा है। साथ ही इस योजना के तहत एनएसडीसी की ओर से CCSU में सेंटर फर्सर फ्यूचर स्किल्स की भी शुरुआत की जाएगी। वहीं स्पोर्ट्स फिजिकल एजुकेशन फिटनेस एंड लीजर स्किल्स काउंसिल (SPEFL&SC) ने CSR फंड के माध्यम से यहां मैन्युफैक्चरिंग-कम-ट्रेनिंग फैसिलिटी स्थापित की है। CCSU की यह योजना आने वाले समय में हजारों महिलाओं के लिए रोजगार का रास्ता खोल सकती है।

गाजियाबाद के छात्र को AI इनोवेशन के लिए मिला 60 लाख का निवेश

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश : उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद के एक १३ वर्षीय छात्र ने अपनी सोच और मेहनत से अनूठा काम किया है, जिसकी चर्चा पूरे शहर ही नहीं, प्रदेश में हो रही है। जी हां डीपीएसजी मेरठ रोड के कक्षा 9वीं के छात्र जयवर्धन त्यागी ने ऐसा एआई प्लेटफॉर्म तैयार किया है, जो स्किन कैंसर मरीजों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकता है, बता दें जयवर्धन त्यागी द्वारा विकसित न्यूरोपैक्स एआई प्लेटफॉर्म स्किन कैंसर के लक्षणों की पहचान करने में मदद करता है। यह न्यूरोपैक्स एआई प्लेटफह्रर्म मरीजों की स्थिति को समझकर यह भी बताता है कि उन्हें कौन-कौन से जरूरी मेडिकल टेस्ट कराने चाहिए। इससे बीमारी की समय रहते पहचान संभव हो सकेगी।

रियलिटी शो से मिला 60 लाख का निवेश जयवर्धन के इस इनोवेटिव प्लेटफॉर्म को एक रियलिटी शो में 5 प्रतिशत इक्विटी के बदले 60 लाख रुपये का निवेश मिला है। इसके अलावा, एक अन्य इन्वेस्टर ने उन्हें फेलोशिप की पेशकश भी की है। इस फेलोशिप के तहत जयवर्धन को यूरोप और अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने प्लेटफॉर्म को और बेहतर बनाने का अवसर मिलेगा। जानकारी के अनुसार न्यूरोपैक्स एआई को तैयार करने में जयवर्धन को लगभग एक वर्ष का समय लगा। इस प्लेटफॉर्म की कई डॉक्टरों ने भी सराहना की है। फिलहाल जयवर्धन स्किन कैंसर से जुड़े फीचर्स को और बेहतर बनाने पर काम कर रहे हैं। भविष्य में वे अन्य बीमारियों के लिए भी ऐसे प्लेटफॉर्म विकसित करने की योजना रखते हैं।

आत्मनिर्भरता की मिसाल : मुरादाबाद की महिलाएं बना रही हैं सपनों को पहचान

मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश : जब हौसले मजबूत हों और साथ चलने का जज्बा हो, तो साधारण हाथ भी असाधारण काम कर दिखाते हैं। मुरादाबाद की यह महिलाएं कभी केवल घर-गृहस्थी तक सीमित थीं, लेकिन आज वही हाथ अपने सपनों को आकार दे रहे हैं। ये किसी बड़े शहर की कारोबारी नहीं हैं, फिर भी इनका आत्मविश्वास किसी बड़ी कंपनी से कम नहीं। सिर्फ आठ महिलाओं ने मिलकर एक सपना देखा और उसे नाम दिया- तान्या बिश्नोई स्वयं सहायता समूह।

कॉटन की रस्सी और कड़ी मेहनत से बने इनके हैंडबैग आज केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की पहचान बन चुके हैं। मुरादाबाद से लेकर मेरठ और लखनऊ तक इनके बनाए बैग लोगों को खूब पसंद आ रहे हैं। महिलाएं बताती हैं कि जहां भी वे स्टॉल लगाती हैं, ग्राहक खुद चलकर आते हैं। अब तो ऑनलाइन ऑर्डर भी मिलने लगे हैं।

इस काम से हर महिला महीने में करीब 15 से 20 हजार रुपये कमा रही है। लेकिन सबसे बड़ी कमाई पैसे से ज्यादा खुद पर बढ़ा भरोसा है। आज ये महिलाएं न केवल आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि दूसरी महिलाओं को भी आगे बढ़ने की राह दिखा रही हैं। यह कहानी सिर्फ कमाई की नहीं, बल्कि नारी शक्ति, सामूहिक प्रयास और आत्मनिर्भर भारत की सशक्त मिसाल है।

गोबर से गमले तक : प्लास्टिक मुक्त उत्तर प्रदेश की नई पहल

उत्तर प्रदेश को हरा-भरा और प्लास्टिक मुक्त बनाने की दिशा में योगी सरकार लगातार ठोस कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की 'आत्मनिर्भर गोशाला' की सोच को आगे बढ़ाते हुए अब एक अनोखी पहल शुरू की जा रही है। प्रदेश में होने वाले बड़े पौधरोपण अभियानों में अब प्लास्टिक की पॉलीथिन का इस्तेमाल नहीं होगा, बल्कि उनकी जगह गाय के गोबर से बने ऑर्गेनिक गमलों का उपयोग किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश गो सेवा आयोग ने इस योजना की पूरी तैयारी कर ली है। आयोग के अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता के अनुसार, इस वर्ष के वृहद पौधरोपण अभियान में पौधों को गोबर से बने गमलों में लगाया जाएगा। इसके लिए प्रदेश की गोशालाओं को गमला उत्पादन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस कार्य से महिला स्वयं सहायता समूहों और युवाओं को जोड़ा जाएगा, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। वन विभाग की नर्सरियों में भी इन ऑर्गेनिक गमलों को प्राथमिकता दी जाएगी। यह पहल केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है। इससे गौशालाएं आत्मनिर्भर बनेंगी, गौ-पालकों की आय बढ़ेगी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। सरकार इस अभियान को जन आंदोलन का रूप देकर प्लास्टिक मुक्त उत्तर प्रदेश का लक्ष्य प्राप्त करना चाहती है।

सक्षम आंगनबाड़ी, सशक्त भविष्य

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश : जब शिक्षा रोचक, सहज और तकनीक से जुड़ी हो, तो बच्चों में सीखने की ललक अपने आप बढ़ जाती है। इसी सोच को साकार करते हुए उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले में आंगनबाड़ी केंद्रों की तस्वीर बदली जा रही है। जिले के 225 आंगनबाड़ी केंद्रों को स्मार्ट टीवी से जोड़ा गया है, जिससे अब बच्चों की पढ़ाई केवल किताबों तक सीमित नहीं रही। स्मार्ट टीवी के माध्यम से बच्चों को कहानियों, पहेलियों, कार्टून और एनीमेशन के जरिए अक्षर ज्ञान, गिनती और रंगों की पहचान सिखाई जा रही है। खेल-खेल में होने वाली इस पढ़ाई से बच्चों की समझ, बोलने की क्षमता और आत्मविश्वास में स्पष्ट सुधार देखने को मिल रहा है। इसका सकारात्मक असर बच्चों की उपस्थिति पर भी पड़ा है, जो लगातार बढ़ रही है। जिला कार्यक्रम अधिकारी शशि वार्ष्णेय के अनुसार, डिजिटल माध्यम से शिक्षा को आकर्षक बनाया गया है और बच्चों को नियमित रूप से केंद्रों तक लाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जिन केंद्रों में स्मार्ट टीवी लगाए गए हैं, वहां बिजली और इंटरनेट की निर्बाध सुविधा के लिए इन्वर्टर की भी व्यवस्था की जा रही है। वर्ष 2023–24 और 2025 के दौरान जिले के कई आंगनबाड़ी केंद्रों को 'सक्षम आंगनबाड़ी' घोषित किया गया है। इन केंद्रों में डिजिटल शिक्षा के साथ वॉल पेंटिंग, पोषण वाटिका और शुद्ध पेयजल के लिए आरओ फिल्टर जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। साथ ही कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को विशेष प्रशिक्षण देकर शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाया जा रहा है। प्रशासन का लक्ष्य है कि गर्मियों तक सभी चिन्हित केंद्रों में आरओ की सुविधा पूरी कर बच्चों को सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण प्रदान किया जा सके, ताकि मजबूत और शिक्षित भारत की नींव रखी जा सके।

गोबर से कारोबार तक : दीपक राणा की सफलता कहानी

मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश : उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के युवा उद्यमी दीपक राणा ने यह सिद्ध कर दिया है कि सही सोच और मेहनत से साधारण चीज भी बड़ा कारोबार बन सकती है। गाय का गोबर, जिसे आमतौर पर केवल खाद के रूप में देखा जाता है, दीपक ने उसे मुनाफे के व्यवसाय में बदल दिया। उन्होंने इस स्टार्टअप की शुरुआत मात्र 30 हजार रुपये के निवेश से की थी, जो आज आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुका है।

दीपक गाय के गोबर से धूप स्टिक, धूप कोन, वैदिक हवन सामग्री कप, दीपक और अन्य पूजा उत्पाद तैयार कर रहे हैं। ये सभी उत्पाद पूरी तरह प्राकृतिक, रसायन-मुक्त और पर्यावरण के अनुकूल हैं। वह स्थानीय गौशालाओं से गोबर खरीदते हैं, जिससे गौशालाओं को भी आय का साधन मिलता है। गोबर को प्रोसेस कर आकर्षक और उपयोगी पूजा सामग्री में बदला जाता है। आज उनके उत्पाद उत्तर प्रदेश के साथ-साथ दिल्ली और कर्नाटक तक पहुंच चुके हैं। इस व्यवसाय से दीपक हर महीने करीब 1.5 लाख रुपये की कमाई कर रहे हैं। यह पहल न केवल आमदनी का जरिया बनी है, बल्कि गौवंश संरक्षण और पर्यावरण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

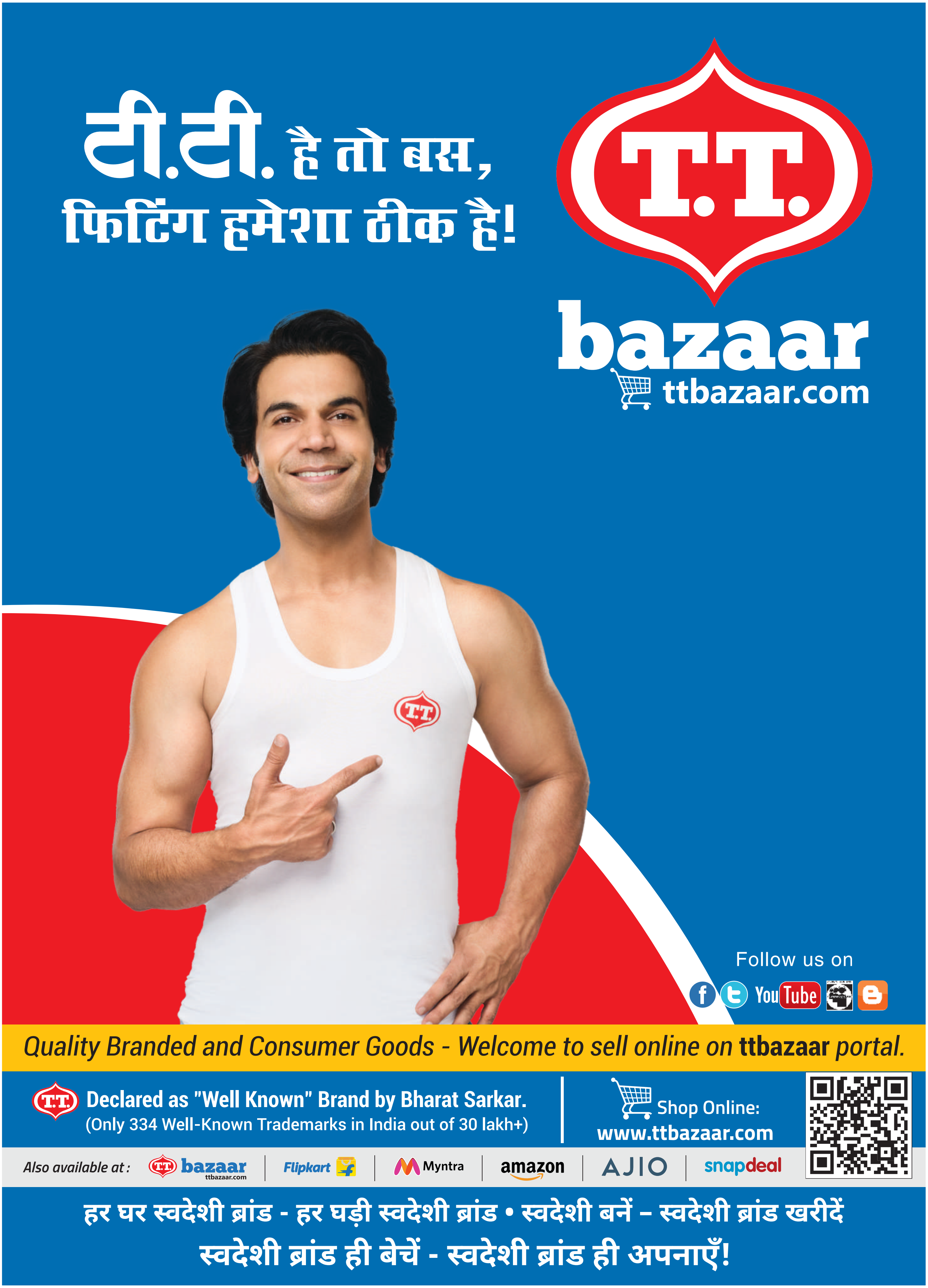
टी.टी. है तो बस,
फिटिंग हमेशा ठीक है!
T.T.
bazaar
ttbazaar.com
T.T.
Follow us on
You Tube
Quality Branded and Consumer Goods - Welcome to sell online on ttbazaar portal.
T.T.
Declared as "Well Known" Brand by Bharat Sarkar.
(Only 334 Well-Known Trademarks in India out of 30 lakh+)
Shop Online:
www.ttbazaar.com
Also available at :
bazaar
ttbazaar.com
Flipkart
Myntra
amazon
AJIO
snapdeal
हर घर स्वदेशी ब्रांड - हर घड़ी स्वदेशी ब्रांड • स्वदेशी बनें – स्वदेशी ब्रांड खरीदें
स्वदेशी ब्रांड ही बेचें - स्वदेशी ब्रांड ही अपनाएँ!

RNI No. : UPHIN/2023/84344
Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2026-27-28

देश में नंबर 1 उत्तर प्रदेश

जहां उत्तर प्रदेश
लाइन वहीं से

प्रति वर्ष 400 लाख टन फल एवं सब्जियों का उत्पादन

गन्ना, चीनी, खाद्यान्न, आम, दुग्ध, आलू, शीरा उत्पादन में अग्रणी

करके दिखाए जो
डबल इंजन
सरकार है वो

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश